महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-/2015

e-paper:www.srushtiagronews.com

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

वर्ष : 1 अंक - 24 | मुंबई, 16 जनवरी से 31 जनवरी 2014 | मुल्य-2/- रुपए पृष्ठ -8

सृष्टि एग्रो परिवार की तरफ से सभी देशवासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अधिक पैदावार के लिए आधुनिक कृषि आवश्यक- सुरेश शर्मा

सुरेश शर्मा

अन्ता. .देश का किसान तभी आत्मनिर्भर बनेगा जब उसे आधुनिक कृषि की जानकारी हो,कृषि मे उन्नत फसल के लिये जितनी खाद की आवश्यकता होती है!उतना ही आवश्यक है आधुनिक तकनीक की जानकारी का होना,यह मानना है सृष्टि एग्रो के प्रधान संपादक सुरेश शर्मा का , वह सृष्टि एग्रो द्वारा, कृषि विज्ञान केन्द्र मे आयोजित किसान गोष्ठी मे बोल रहे थे,सृष्टि एग्रो ने कृषि विज्ञान केन्द्र में किसान गोष्ठी का आयोजन किया!सृष्टी एग्रो ने जागरुक किसानों का सम्मान किया किसान गोष्ठी के मुख्य अतिथी के वी के के मुख्य वैज्ञानिक डा.आई .एन .गुप्ता थे अध्यक्षता बाल किशन मीणा ने की,साथ ही कार्यक्रम मे उद्धान वैज्ञानिक डा.सुभाष असवाल डा .के सी मीणा ,तथा टी सी वर्मा विशिष्ठ अतिथि थे ,इस मौके पर दिलबाग सिंह चौधरी ,महावीर कुशवाह घासीलाल मीणा बालकिशन मीणा तथा गणपत लाल नागर को सम्मनित किया गया!

डॉ. अनिल विट्ठल को अप्पासाहेब पवार पुरस्कार

मुम्बई..सन 2012 का द्विवार्षिक डॉ . अप्पासाहेब पवार मॉडर्न एग्रीकल्चर हाई टेक अवार्ड कोंकण के डॉ. अनिल विट्ठल को कृषि मन्त्री शरद पवार ने जलगाव में प्रदान किया. जैन इर्रिगेशन एवं भंवरलाल व कांताबाई जैन मल्टीपरपोस फाउंडेशन कि तरफ से ये प्रतिष्ठित अवार्ड कृषि जगत में महत्वपूर्ण एवं सम्मानीय स्थान रखता है।

महंगी बिजली व उर्वरक का रास्ता साफ

नई दिल्ली, अगले वित्त वर्ष से देश में महंगी बिजली और उर्वरक का रास्ता साफ हो गया है। तमाम राजनीतिक विरोध को दरकिनार कर केंद्र सरकार ने घरेलू स्तर पर उत्पादित प्राकृतिक गैस की कीमत को बढ़ाने संबंधी अधिसूचना जारी कर दी है। इसके मुताबिक गैस की मौजूदा कीमत 4.2 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू से बढ़कर 8.4 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू तक हो जाएगी। इससे गैस आधारित बिजली और उर्वरक प्लांटों की लागत बढ़ेगी जिसका बोझ भी आम जनता को ही उठाना पड़ेगा। प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष सी रंगराजन की अध्यक्षता में गठित समिति की सिफारिश पर मूल्य निर्धारण की नई नीति बनाई गई है। नए फॉर्मूले से वैसे तो सबसे ज्यादा फायदा रिलायंस इंडस्ट्रीज को होगा क्योंकि देश का सबसे बड़ा गैस फील्ड उसके पास ही है। मगर सरकार ने स्पष्ट किया है कि जब कंपनी बैंक गारंटी जमा कराएगी तभी वह नए फार्मूले के मुताबिक गैस बेच सकेगी। रिलायंस के पास केजी बेसिन में देश का सबसे बड़ा गैस ब्लॉक है। इसका उत्पादन लगातार कम हो रहा था। अब जबकि कीमत बढ़ाने का फैसला हो गया है तो कंपनी ने भी उत्पादन बढ़ा दिया है।

बुआई मे बीबीएफ प्लान्टर यंत्र के प्रयोग से किसानों को मिली नई दिशाः डॉ. राधाकृष्ण वीखे पाटील

डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विश्वविद्यालय, अकोला द्वारा बीबीएफ प्लान्टर विकसीत किया गया जिसके द्वारा बेड तैयार होकर उसपर फसल की बुआई की जाती है। इस यंत्र में ऐसी व्यवस्था है कि दो गहरी नाली तयार होकर बीचमें बेड का निर्माण होता है। इसी बेडपर फसल की तीन, चार, पांच एवं छः लाइन में बीज एवं खाद की बुआई की जाती है। अधिक वर्षा का पानी गहरी नालीमेसे बह कर मिट्टी को ड्रेन करेगा व कम वर्षा होने पर उन नालीयोंका संग्रहीत पानी फसल को जादा दिनोंतक प्राप्त होगा। जिससे जब कुछ समय वर्षा नही होने पर फसल को नुकसान नही होंगा।

इस समस्या की स्थाई व्यवस्था हेतु बारानी खेती तंत्रज्ञान को लागु किया गया। गांव मे ग्रामसभा लि गई, सभी को इस यंत्र के बारे में .षि विज्ञान केंद्र के कृषि अभियंता श्री. प्रमोद रेणापुरकर द्वारा जानकारी दी गई। गांव से किसानोंके एक समुहने कम्पनी का रजिस्ट्रेशन कराया। कम्पनीद्वारा 2 बुवाई यंत्र, 1 ट्रॅक्टर चलित फवारा यंत्र भी क्रय किया गया है। .षि विज्ञान केंद्र व क्रांतीज्योती ॲग्रो प्रोडयुसर कम्पनी द्वारा उपलब्ध बुआई यंत्र की विविध विधियों के माध्यमसे 400 एकर मे सोयाबीन की बुआई सम्पन्न कि गई। इस यंत्रद्वारा बुआई में पारम्पारिक पध्दती से 40 प्रतिशत बीज व समय की बचत हुई है। इस पध्दती का अवलोकन करने हेतु जिले व जिले के बाहर से किसान अधिकारी गांव मे लगातार भ्रमण कर रहे है। डॉ. राजाराम देशमुख,महाराष्ट्र शासन के बारानी खेती अभियान के सलाहकार तथा पूर्व कुलपति महात्मा फुले .षि विद्यापीठ राहुरी एवं जिले के सभी .षि अधिकारीयों का इस कार्य को देखने हेतु भ्रमण किया गया। बारानी खेती अभियान की राज्यस्तरीय कार्यशाला औरंगाबादमें सम्पन्न हुई। जिसमे महाराष्ट्र के .षि मंत्री डॉ. राधा.ष्ण वीखे पाटील अध्यक्ष थे। .षि विज्ञान केंद्र द्वारा किए गये सफल प्रयोग को सभी के समक्ष केंद्र के श्री. प्रमोद रेणापुरकर द्वारा प्रस्तुत किया गया।

महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों की टाउन प्लानिंग

मुम्बई । महाराष्ट्र के उच्च एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री राजेश टोपे ने बताया कि शहर के साथ ग्रामीण इलाकों का विकास करने के लिए ग्रामीण इलाकों का भी टाऊन प्लानिंग बनाया जाएगा। 62वें नेशनल टाऊन एंड कंट्री प्लानिंग कांग्रेस प्रदर्शनी का उद्घाटन शुक्रवार को टोपे ने किया। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि शहर के साथ ग्रामीण इलाके का भी नियोजित तरीके से विकास होना आवश्यक है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्र का टाऊन प्लानिंग बनाया जा रहा है।

पत्तों का रूप देख पता चल जाएगा पेड़ की बीमारी का हाल

मुम्बई। क्या कभी आप सोच सकते हैं कि एक पेड़ भी इंसान

की तरह बीमार हो सकता है, एक पेड़ इंसानों की तरह बीमार होकर दम तोड़ सकता है, एक पेड़ बीमार होकर ठीक भी हो सकता है और क्या एक पेड़ को देख कर यह यह पता लगा सकते हैं कि वह बीमार है या ठीक है। इन सभी सवालों का जवाब ढूंढ निकाला है पुणे के भारती विद्यापीठ के वूमेंस इंजीनियरिंग कॉलेज की एक रिसर्च टीम ने एक रिसर्च किया है। इस शोध के मुताबिक अब आसानी से सिर्फ कुछ ही मिनटों में पता लगाया जा सकता है कि कोई पेड़ बीमार है या ठीक है। अगर वह पेड़-पौधा बीमार है तो उसे कौन सी बीमारी है।

तहसील व विकास खण्डस्तर पर संवादाताओं की आवश्यकता

मुंबई से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी कृषि पक्षिक समाचार पत्र सृष्टि एग्रो उपरोक्त राज्य के विकास खंड एंवम तहसील स्तर पर संवादाता नियुक्त करने है. संवादाता बनने के लिए कृषि विकास की जानकारी एंवम ग्रामीण कृषि से सम्बन्धित होना अति आवश्यक है!कृषि विषय के जानकार व कृषि आदान से जुडे व्यक्तियों को विशेष प्राथमिकता दी जाएगी !संवादाता की नियुक्ति कमीशन आधार पर होगी , संवादाता का मुख्य कार्य सृष्टि एग्रो के अधिक से अधिक सदस्य बनाना व विज्ञापन लेना रहेगा

अपने आसपास की घटनाओं पर नज़र रखना,व उसका समाचार सृष्टि एग्रो में भेजना प्रमुख दायित्व मे शामिल रहेगा अगर आप उपरोक्त शती से सहमत है तो सृष्टि एग्रो से जुडने के लिए सम्पर्क करें.

022-66998360/61.
Fax: 022-66450908,
info@srushtiagronews.com

संपादकीय

पशुधन उपेक्षित क्यो

भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक ताने-बाने में कृषि प्रधानता और पशुधन की परिकल्पना प्राचीन समय से ही रही है। किसी भी समाज में खाद्य-सुरक्षा के लिए कृषि उत्पाद और पशुधन उत्पाद की उपल्बधता आवश्यक मानी जाती है। इस चीज को अगर हम भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो पता चलता है कि ग्रामीण भारत में कृषि के साथ ही साथ पशुपालन की परंपरा भी समानांतर ढ़ंग से चलती रही है। ग्रामीण जीवन में पशुपालन ही वो जरिया है जो किसानों की नियमित आय का साधन बनता है और यही वजह है कि कृषि के साथ ही साथ लगभग 72 फीसदी ग्रामीण घरों में पशुपालन किया जा रहा है। पूरे देश में पशुपालन ने उन लोगों के लिए संजीवनी का काम किया है जो भूमिहीन या बेरोजगार हैं। ऐसे में यह सवाल विचारणीय हो जाता है कि आखिर वजह क्या है कि पशुधन का विकास निराशाजनक हो चुका है कृषि विकास दर भी लगातार नकारात्मक बिंदु की ओर अग्रसर है। पशुधन में मामले में भारत का दुनिया में पहला स्थान है। 18वीं पशुधन जनगणना 2007 के मुताबिक भारत में पशुधन की कुल संख्या 52 करोड़ है। पशुधन की इस आबादी में २० करोड़ गाय-बैल, 10 करोड़ भैंस और 14 करोड़ बकरियां हैं जिनका दूध वृहद स्तर पर उत्पादित किया जा रहा है और दुग्ध उत्पादन में भी हिंदुस्तान दुनिया भर में अव्वल है।

हिंदुस्तान ने साल 2012-13 में 133 मिलियन टन दूध का उत्पादन किया और सालाना वृद्धि पर गौर करें तो 2011-12 से यह 5 फीसदी के आस-पास है। केवल दुग्ध उत्पादन ही नहीं बल्कि पशुधन से संबंधित हर उत्पाद अर्थव्यवस्था को बल दे रहा है। केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय के आंकड़ों के मुताबिक साल 2011-12 में पशुधन उत्पादन का मूल्य 3,05,484 करोड़ रहा, जो धान और गेंहू के उत्पादन मूल्य से अधिक है। ऐसे में पशुधन के विकास की तरफ सरकार की उदासीनता आश्चर्यजनक है। पशुधन के विकास पर नजर डालें तो पता चलता है कि 1951 में गाय-भैंसों की संख्या 19.8 करोड़ थी जो 2006-07 में 30.4 करोड़ ही पहुंच पाई। न तो पशुधन की आबादी बढ़ाने के क्षेत्र में कोई खास पहल हो सकी और न ही नस्लसुधार में कोई क्रांति नजर आयी। हालांकि ऐसा नहीं है कि यह उदासीनता केवल पशुधन के मामले में ही है, कमोबेश कृषि क्षेत्र का हाल भी ऐसा ही है।

2011-12 में कृषि विकास दर 2.8 प्रतिशत पर आ गई है और जीडीपी में योगदान महज 13.7 फीसदी रह गया है। बात 2009-10 की करें तो जीडीपी में कृषि का योगदान 14.6 फीसदी था। इन परिस्थितियों में प्रश्न यही उठता है कि आखिर खाद्य सुरक्षा के लिए अहम माने जाने वाले कृषि उत्पादन और पशुधन उत्पादन के प्रति देश में उदासीनता क्यों बनी हुई है।

उद्योग बढ़ रहे हैं कृषिभूमि घट रही है, पशुधन की आबादी तो है लेकिन नस्ल सुधार न होने की वजह से वह उत्पादन संभव नहीं हो पा रहा है जो उत्पादन पश्चिमी देश कम पशुधन के बावजूद भी कर रहे हैं। हालांकि पशुधन के विकास के लिए 2013-14 के केंद्रीय बजट में राष्ट्रीय पशुधन मिशन के स्थापना की घोषणा की गई है लेकिन सवाल यही कि घोषणा करने भर से लक्ष्य पूरा हो जाएगा ? घोषणाएं हर साल होती हैं लेकिन परिणाम क्या होता है वो किसी से भी छिपा नहीं है। आवश्यकता है त्वरित गति से कदम उठाने की पशुधन के प्रति संवेदनशील होने की !

सुरेश शर्मा
(संपादक)

घरों से निकलने वाले गंदे पानी पर शोध

मुम्बई. भूगर्भ जलस्तर एवं नदियों का जलस्त्रोत घटता जा रहा है। वर्तमान में पानी का बढ़ता खर्च भविष्य के लिए चुनौती बन रहा है। पर्यावरणविदों का मानना है कि ऐसा ही आलम रहा, तो वह दिन दूर नहीं जब समूचा विश्व जलसंकट से जूझेगा। इसी संकट को रोकने एवं लोगों को जल की उपयोगिता समझाने के लिए उपराजधानी की युवा शोद्यार्थी दक्षा बोरकर ने नायाब तरीका खोज निकाला है। दक्षा ने घरों से निकलने वाले सीवरेज के पानी पर शोध करके हजारों लीटर पानी बर्बाद होने से बचाया है। ग्रे वॉटर का उपचार कर दक्षा ने एक अद्भुत अनुसंधान किया है।

एपीएमसी कानून में संशोधन की जरूरत ..पृथ्वीराज चव्हाण

मुंबई। मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण के मुताबिक मांग बढ? पर सब्जियों व फलों की कीमतें अचानक बढ़ जाती हैं। इसलिए एपीएमसी कानून में संशोधन की जरूरत है। किसानों कोएपीएमसी या अपना उत्पादन सीधे उपभोक्ताओं को बेचने का विकल्प मौजूद हो, इस पर राज्य सरकार गंभीरता से विचार कर रही है। शरद पवार ने भी एपीएमसी कानून में बदलावकी वकालत की है। पवार के मुताबिक कई राज्यों ने कानून में संशोधन किया है। बिहार ने इसके लिए अलग से कानून बनाया है। हालांकि राज्य सरकार ने भी संबंधित कानून में बदलाव के लिए कुछ प्रावधान किए हैं। किसान अपनी उपज सीधे खुदरा बाजार याग्राहकों को बेच सकें, इसके लिए एपीएमसी कानून में कारगर बदलाव की जरूरत है।

एनआईएफटीईएम में बीटेक, एमटेक व पीएचडी में प्रवेश शुरू

सोनपत। हरियाणा स्थित नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फूड टेक्नोलॉजी, एंटरप्रेन्योरशिप एंड मैनेजमेंट (एनआईएफटीईएम) में संचालित बीटेक, एमटेक व पीएचडी कोर्स के सत्र 2013-14 में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। छात्रों को प्रवेश जेईई (मेन)-2013 की मेरिट सूची के आधार पर दिया जाएगा। संस्थान में फूड टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट विषय में चार वर्षीय बीटेक कोर्स की कुल 207 सीटें हैं। इनमें 180 सीटें भारतीय व 27 सीटें विदेशी छात्रों के लिए आरक्षित हैं। विदेशी छात्रों के लिए आरक्षित 27 सीटों में से भी 9 सीटें दक्षिण पूर्वी देशों व खाड़ी देशों में काम कर रहे भारतीयों के लिए आरक्षित रहेगी। मेरिट के आधार पर 10 प्रतिशत छात्रों को स्कॉलरशिप देने का प्रावधान भी है।

किसान मित्र

गुग्गल (कोमिफोरा मुकुल)

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एवं अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
सी. सी. एस. हरियाणा .षि विश्वविद्यालय, हिसार – 125 004

गुग्गल ब्रुसरैसी कुल का पौधा है, जिसे संस्:त में गुग्गुल व अंग्रेजी में इण्डियन बडेलियम ट्री कहते हैं। यह भारतवर्ष में राजस्थान, गुजरात, झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, आसाम, पूर्वी बंगाल, मैसूर आदि स्थानों पर जंगलों में प्रा.तिक रूप में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त यह पाकिस्तान के सिंध व बलूचिस्तान क्षेत्रों, अरब, अफ्रीका व अफगानिस्तान के दक्षिण भागों में भी पाया जाता है। गुग्गल एक बहुशाखीय तथा बहुवर्षीय 5 से 8 फुट ऊँचा झाड़ीदार पौधा है। इसकी शाखाओं का अग्रभाग नुकीला होता है। इसके पत्ते चिकने तथा चमकदार होते हैं। इसकी शाखायें श्वेत तथा मुलायम होती हैं। इसकी छाल हल्की हरी तथा पीलापन लिये होती है। इसके तने व शाखाओं पर कागज़ की तरह एक झिल्ली होती है। इसके फल मांसल, लम्बे, गोल तथा छोटे बेर की तरह लाल रंग के होते हैं। जिनको गुगलिया कहते हैं। इसके तने व शाखाओं से सफेद रंग का दूध की तरह गोंद निकलता है जो सुगन्धीय, गाढा तथा अनेक वर्ण का होता है जिसको गुग्गल कहते हैं। यह अग्नि में जलता है, धूप में पिघलता है तथा गरम पानी में डालने पर दूध के समान हो जाता है। गुग्गल पौधे की वृद्धि बहुत धीमी गति से होती है इसलिए इसकी आयु 400 वर्षो तक होती है। शीतकाल व ग्रीष्म काल में वृद्धि रूक जाती है। फूल मार्च–अप्रैल के महीने में आते हैं।

गुग्गल के औषधीय गुणों तथा बढ़ती माँग के कारण यह प्रा.तिक वनों से विलुप्तावस्था की कगार पर आ गया है। इसी कारण इसको भारत सरकार ने दुर्लभ प्रजाति के पौधों की श्रेणी में रखा है। गुग्गल का या इससे बनी औषधियों का निर्यात करने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया है लेकिन किसान अपने खेत में लगाकर इसकी खेती करके इसका उत्पादन करता है तो इसका निर्यात कर सकता है। इसके अतिरिक्त कोई भी किसान से उत्पादित फसल से प्राप्त गोंद को खरीद कर उसका निर्यात भी कर सकता है। इसके लिये उसको खेती करने का प्रमाण–पत्र स्थानीय पटवारी तथा वन अधिकारी से प्राप्त करना अनिवार्य है। औषधीय उपयोगः गुग्गल एक दिव्य औषधि है। यह हृदय में कोलेस्ट्रोल नहीं जमने देता। यह जलन नाशक, वातरोग, गठिया, आमाशय के रोग, अपचन, दमा आदि में उपयोगी है। यह रक्तशोधक, रक्तकण व श्वेतकण वर्धक व य.त उत्तेजक भी होता है। वातजन्य बीमारियों में इसका उपयोग विशेष रूप से किया जाता है। गुग्गल का उपयोग वातरक्त, आमवात, व्रणशोच, नाड़ी व्रण भगन्दर, कुष्ठ, प्रमेह, मूत्रकच्छ, शोथ, गण्डमाला, उपयंश, नेत्ररोग, शिरारोग, हृदय रोग, अम्लपित्त, स्त्री रोग व पाण्डुरोग, उदर रोग आदि में भी होता है। नाड़ी संस्थान पर गुग्गल का लाभकारी प्रभाव रहता है। यह शरीर में वात को सतुंलित स्थिति में रखता है। गुग्गल त्रिदोष हर, शोथध्न, .मिघ्न व वेदना स्थापना होने के कारण कैन्सर में भी लाभप्रद है। हृदयरोग, विशेषतः हृदयावरोध एवं पाण्डू में भी यह उपयोगी है। यह वसा तथा पित्त के चयापचय के कारण उत्पन्न होने वाले हृदयरोगों को दूर करने में भी श्रेष्ठ है। अगरबत्ती, धूप, सूगंध सामग्री आदि के निर्माण में षि इसका उपयोग होता है।

रासायनिक संगठनः इसकी गोंद में ओलियोगम, मिर्सीन व डायमिसीन दो प्रमुख घटक पाये जाते हैं। एमिनों एसिड भी पाये जाते हैं। गुग्गल में लगभग 0.5 प्रतिशत सुगन्धीय तेल, गोंद, रेजिन व अन्य पदार्थो उपस्थित होते हैं।

जलवायुः इसके लिये उष्णकटिबंधीय कम वर्षा वाले क्षेत्र (70 से 115 सें. मी.), शुष्क जलवायु, आर्द्र व नमी वाले क्षेत्र उपयुक्त होते हैं। यह छाया वाले वृक्षों के साथ अच्छी वृद्धि करता है। इसलिये इसको वनों या बगीचों में, खेतों की मेढ़ों पर, छायादार वृक्षों के नीचे, फेंसिंग के रूप में खेतों के चारों तरफ लगाया जा सकता है।

भूमिः इसकी खेती के लिये बलुई, चिकनी व दोमट मिट्टी जिसमें जल निकास अच्छा हो उपयुक्त होती है। यह शुष्क स्थानों पर अच्छी वृद्धि करता है। यह पड़ती भूमि के विकास हेतू असिंचित क्षेत्रों में उगाया जा सकता है।

प्रवर्धनः गुग्गल का प्रवर्धन कलमों द्वारा किया जाता है।

कलमों द्वारा पौध तैयार करनाः गुग्गल के पौधे कलम से तैयार किये जाते हैं। पुराने पौधों से कलम काटने का ठीक समय 20–25 जनवरी से 20–25 फरवरी का होता है। कलमों की लम्बाई तथा मोटाई क्रमशः 9 इंच व 0.4 से 0.6 इंच तक होती है। कलमों की मोटाई तर्जनी अँगूली से पतली तथा अंगुठे से मोटी नहीं होनी चाहिये। स्वस्थ पौधों से कलमें काटकर पोलीथीन की थैलियों में लगानी चाहिये तथा प्रतिदिन सिंचाई करनी चाहिये। कलमों को लगाने के एक महीने बाद नये पत्ते आने शुरू हो जाते हैं तथा जुलाई–अगस्त में पौधे लगाने योग्य हो जाते हैं।

रोपाई की विधि : जुलाई–सितम्बर का समय इन पौधों/कलमों को खेत में लगाने का अच्छा समय होता है। इसके लिये सबसे पहले खेत में 60☐60☐60 सें. मी. के गड्ढे बनाने हैं। पौधों को खेत में लगाते समय लाईन से लाईन तथा पौधे से पौधे का फासला 2 मीटर का रखना चाहिये। इस प्रकार एक एकड़ में 1000 पौधे लग जाते हैं।

खादः प्रत्येक पौधे को प्रतिवर्ष 6–8 किलोग्राम अच्छी सड़ी–गली गोबर की खाद दें तो पौधों की बढ़ोतरी अच्छी होती है। इसके लगाने के समय रासानिक खाद का प्रयोग न करें।

सिंचाईः प्रथम सिंचाई पौधे के स्थानान्तरण के तुरन्त बाद करनी चाहिये। इसके बाद भूमि व क्षेत्र के अनुसार समय–समय पर सिंचाई करने से फसल में बढ़ोतरी अच्छी होती है। साधारणतः प्रथम वर्ष में एक माह के अन्तर पर सिंचाई करें। एक वर्ष के बाद सिंचाई की आवश्यकता कम पड़ती है। यह पौधा कम पानी में भी जिन्दा रह सकता है। इस पौधे के प्रत्येक भाग पर एक झिल्ली सी ढकी रहती है जो वर्षा के वाष्पीकरण को सोखता है।

निराई–गुड़ाईः प्रत्येक सिंचाई के बाद खेत में खरपतवारों को उखाड़ते रहना चाहिये। इसलिये वर्ष में 2–3 बार निराई–गुड़ाई आवश्यकतानुसार करनी चाहिये। पौधों पर लिपटने वाले खरपतवारों को खेत में बढ़ने न दें।

कीट नियंत्रणः इसमें दीमक का प्रकोप अधिक होता है। इसके बचाव के लिये जैविक कीटनाशक अधिक असरदार होती है। जैविक नियन्त्रण के लिये नीम, आक व धतूरे के दो दो किलोग्राम पत्तों को पीस कर 100 लीटर पानी में घोल बना लेते है तथा फिर तैयार घोल की 2 लीटर मात्रा को प्रत्येक पौधे में 15–20 दिनों के अन्तर पर लगातार 2–2.5 वर्षो तक डालना चाहिये। इससे दीमक के प्रकोप की सम्भावना नहीं रहेगी।

गुग्गल निकालनाः जब गुग्गल के पौधे 8 वर्ष के हो जाए तब इनके मुख्य तने एवं शाखाओं को छोड़कर सभी पतली शाखाओं को काटकर, छँटाई कर देनी चाहिये। कटी हुई शाखाओं को 0.5–1.0 इंच तक के टूकड़े करके धूप में सुखाते है। इस कार्य के लिए15–20 जनवरी से 15–20 फरवरी तक का समय उत्तम है। क्योंकि इस समय रेजिन की मात्रा सर्वाधिक होती है। सुखे हुए टुकड़ो को बारीक पीस कर फिर सोलवेंट प्रोसेस ;वसअमदज चतवबमेद्ध से गुग्गल निकाल लेते है। एक बार छँटाई करने के बाद शेष बचे हुए गुग्गल के पौधों में नई शाखायें अपने आप आना शुरू हो जाती है। दो वर्ष बाद ये पुन छँटनी करने के योग्य हो जाती है। इस प्रकार प्रत्येक दो वर्ष के बाद गुग्गल के पेड़ो की छँटाई की जाती है।

उत्पादनः एक पौधे की छँटाई से प्राप्त सामग्री से औसतन 800 ग्राम शुद्ध गुग्गल प्राप्त होता है। सोलवेट प्रोसेस ;वसअमदज चतवबमेद्ध से निकाला गया गुग्गल अर्ध पारदर्शी, हल्के सुनहरे रंग का होता है। इसका वर्तमान अंर्तराष्ट्रीय बाजार मूल्य 200/– प्रति किलोग्राम तक है। सोलवेंट प्रोसेस से निकाले गए गुग्गुल की शुद्धता 100 प्रतिशत होती है।

एक एकड़ में 800 कि. ग्रा. गुग्गल का उत्पादन होता है। गुग्गल का बाजार भाव 200 रु. प्रति कि. ग्रा. है। अतः कुल आमदनी 1.6 लाख रूपये प्राप्त होगी। वृक्षारोपण और गुग्गल निकालने की विधि में अधिकतम 90/– प्रति किलो ग्राम खर्च आता है। इस प्रकार गुग्गल के 8 वर्ष के बाद किसान को लगभग 90,000/– रूपये प्रति एकड़ शुद्ध लाभ प्राप्त हो जाता है। यह लाभ प्रत्येक दो वर्ष में लगभग 400 वर्ष तक मिलता रहेगा। अंतर फसलेंः गुग्गल की वृद्धि बहुत मंद गति से होती है अतः बीच के खाली स्थान में कालमेघ, अश्वगंधा, सनाय, ग्वारपठा आदि की फसलें ली जा सकती है। गुग्गल का विकास अर्ध छायादार स्थानों पर अच्छा होता है। अतः बागीचों में पेड़ों के नीचे इसे लगाया जा सकता है। अतः औषधीय पौधों में गुग्गल की खेती बिना अधिक रख रखाव के भी अत्यधिक लाभप्रद है।

पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियमः प्रावधान एवं अपेक्षाएं

डॉ. अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि प्रसार
सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर, राजस्थान

प्रश्न : पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियम क्या है ?

उत्तरः कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण कड़ी है, जो कि सर्वाधिक रोजगार देने वाला व्यापक तथा प्राचीन उद्यम है। 1960 से कृषि क्षेत्र में आई त्वरित बढ़ोतरी जिसके कारण उत्पादन प्रणाली के संचरण तथा पौधों में अनुवांशिक सुधार जैसे कारकों से भारतीय कृषि में बदलाव आया। निश्चित रूप से प्रथम विश्व युद्ध के बाद से कुछ हद तक अनुवांशिक विविधता में कमी आई। अनुवांशिक विविधता के नुकसान को रोकने और कृषि बढ़ोतरी को बनाये रखने तथा साथ ही भारत को अधिकतम लाभ पहुँचाने की स्थिति में लाने के लिये बहुत से कदमों की रूपरेखा तैयार की गयी जिनमें से एक कदम "पौधा किस्म और कृषक संरक्षण अधिकार" के भारतीय अधिनियम को वर्ष 2001 में लागू करना हैं । दीर्घावधि में इस अधिनियम में बीज उद्योग को फलने–फूलने तथा किसानों को उच्च गुणवत्ता के बीजों और पौधा–सामग्री उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी।

भारत सरकार ने 2001 में "पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियम" लागू किया तथा इस अधिनियम को कार्यान्वित करने के लिए सन् 2003 में विनियम निर्धारित किए। यह अधिनियम पौधा किस्मों के संरक्षण की एक प्रभावी प्रणाली स्थापित करने के लिए डिजाइन किया गया है। इस अधिनियम में नई किस्मों के विकास हेतु पादप आनुवंशिक संसाधन सामग्री के संरक्षण, उसमें सुधार और उसे उपलब्ध कराने में कृषकों के अधिकारों को मान्यता दी गई है और साथ ही यह भी माना गया है कि कृषक भी नई किस्मों के खोजकर्ता है।

प्रश्न : इस अधिनियम के क्या उद्देश्य हैं ?

उत्तरः "नई किस्मों के विकास हेतु पादप आनुवंशिक संसाधनों के संरक्षण, उनमें सुधार और उन्हें उपलब्ध कराने में किसी भी समय किए गए योगदान के लिए कृषकों के अधिकारों को पहचानना और उनकी रक्षा करना", "इसके अतिरिक्त त्वरित कृषि विकास के लिए पौधों की नई किस्मों के विकास को प्रोत्साहित करना", "पादप प्रजनकों के अधिकारों की रक्षा करना और नई किस्मों के प्रजनन के लिए निवेश को बढ़ावा देना" तथा "बीज उद्योग की वृद्धि को सुगम बनाना" इस अधिनियम के उद्देश्य हैं ।

प्रश्न : अधिनियम की प्रमुख विशेषताएं क्या हैं ?

उत्तरः इस अधिनियम के अंतर्गत सभी संबंधित पक्षों को कुछ अधिकार प्राप्त है जो इस प्रकार हैं :

प्रजनक के अधिकार

किसी पंजीकृत प्रजनक को अपने उत्पाद के उत्पादन, उसकी बिक्री, विपणन, वितरण, आयात या निर्यात का एकमात्र अधिकार होगा। विद्यमान किस्म के मामले में जब तक प्रजनक या उसका उत्तराधिकारी अपने अधिकार को प्राप्त नहीं करता है, केन्द्र सरकार और उन मामलों में जहाँ उस विद्यमान किस्म को राज्य द्वारा अधिसूचित किया गया हो या बीज अधिनियम 1966 की धारा 5 (1966 का 54) के अन्तर्गत अधिसूचित किया गया हो, वहाँ ऐसे अधिकारों के लिए केन्द्र या राज्य को स्वामी माना जायेगा।

अनुसंधानकर्ताओं के अधिकार

अनुसंधानकर्ताओं को प्रयोगों या अनुसंधान सम्बंधी उद्देश्यों अथवा अन्य नई किस्में सृजित करने के उद्देश्य से विविधता के स्त्रोत का आरंभ करने हेतु किसी पंजीकृत पौधा किस्म के उपयोग का अधिकार होगा, लेकिन वह किसी अन्य किस्म के व्यावसायिक उत्पादन के लिए, किसी संरक्षित किस्म का बार–बार उपयोग नहीं कर सकता।

प्रश्न : पौधा किस्मों का पंजीकरण कैसे एवं किस आधार पर होगा ?

उत्तरः पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण ;च्व्ट – थ्।नजीवतपजलद्ध उन सभी वानस्पतिक वर्गीकरण को घोषित करेगा जिनकी किस्मों का पंजीकरण किया जायेगा। पंजीकरण के लिये प्रस्तावित किस्म में स्पष्ट भिन्नता, समरूपता तथा स्थायित्व/टिकाऊपन होना आवश्यक है। जिसके परीक्षण के लिये केन्द्र स्थापित किये गये हैं। किस्मों के पंजीकरण के लिये प्रार्थना पत्र की रूपरेखा बना ली गयी है। उसी रूपरेखा के अनुसार मांगी गयी जानकारी को उपलब्ध कराना होगा। किस तरह की पौधा किस्में पंजीकरण के योग्य होंगे

- जो किस्में नवीनता, स्पष्टभिन्नता, समरूपता तथा टिकाऊपन के पैमाने पर सही पायी जायेगी वही पंजीकृत होगी।
- किसानों या समुदायों की जानकारी में हों या उगायी जाती हों या बीज अधिनियम 1966 के विभाग–5 के अन्तर्गत घोषित हो चुकी हों, इसमें किसान की किस्म भी हो सकती है। ये किस्में एक विशेष समय सीमा के अन्दर ही पंजीकृत होंगी।
- किसान की किस्म– इसका अर्थ है कि वह किस्में जो किसानों या समुदायों द्वारा विकसित करके परम्परागत रूप से उगाई जाती रही हों। इसके अलावा वह किस्में जो वन्य जैव सम्पदा या आधार प्रजाति से निकाली गयी हो जिसके बारे में किसान समुदाय जानकारी रखते हों।
- प्रारम्भिक स्त्रोत से उद्गामित किस्म वह किस्में जो किसी प्रचलित किस्म से या किस्मों के आपसी सम्मिलन से निकाली गयी हो।

नवीनता–पंजीकरण के लिये आवेदन करने की तारीख के एक साल से पहले भारत में इस किस्म का बीज व्यावसायिक प्रयोग के लिये बेचा न गया हो। देश के बाहर चार साल से पहले बेचना न गया हो।

स्पष्टभिन्नता–किस्म ऐसी हो जो कम से कम एक आवश्यक गुण के लिये अन्य प्रचलित किस्मों से अलग हो।

समरूपता–किस्म, जिस गुण के कारण स्पष्ट रूप से भिन्न दिखायी देती है, उस गुण के लिये तथा अन्य आवश्यक गुणों के लिये समरूपता होनी चाहिये अर्थात् उन गुणों के लिये किस्म के अन्दर विविधता नहीं होनी चाहिए।

टिकाऊपन–आवश्यक गुणों के लिये किस्म में टिकाऊपन भी होना चाहिये अर्थात् बार–बार उगाने पर भी गुणों की स्थिरता बनी होनी चाहिये।

किसान संरक्षित जननद्रव्य और पादप नवीन प्रजातियों के बीच एक निरन्तरता है क्योंकि दोनों एक–दूसरे पर निर्भर है। किसान अथवा उनके समुदाय को उनके बीजों अथवा पौध सामग्री को रखने, इस्तेमाल करने, बदलने, हिस्सेदारी करने तथा बेचने का अधिकार है। वह किस्म जो कि अन्य किस्म से सर्वधा विशिष्ट (डी.) तथा जिसकी उपस्थिति आवेदन करते समय सामान्य जानकारी का एक विषय है और यह पर्याप्त रूप से एकरूप (यू.) तथा स्थिर (एस.) अथवा ;कैद्ध संक्षेप में संबंधित किस्म को पंजीकरण हेतु परखा जाना है।

प्रश्न : किस्मों की सुरक्षा का क्या प्रावधान है ?

उत्तरः ऐसी पौधा किस्मों को पंजीकृत करके सुरक्षा प्रदान करने की व्यवस्था अधिनियम के अंतर्गत की गई जिनमें नवीनता, विशिष्टता, एकरूपता व स्थायित्व का गुण हो। नई किस्मों, भू–प्रजातियों, लोक किस्मों, कृषक किस्मों, अनिवार्यतः व्युत्पन्न किस्मों (ईडीवी) को पंजीकृत करके सुरक्षित किया जा सकता है।

पौधा किस्म पंजीकरणः प्राधिकरण के पौधा किस्म पंजीकरण हेतु मुख्यालय में पौधा किस्मों का एक राष्ट्रीय रजिस्टर रखा जा रहा है। इस रजिस्टर में पंजीकृत पौधा किस्मों के नाम, उनके प्रजनकों के नाम, पते व अधिकार तथा विवरण दर्ज किए जाते हैं।

जीन बैंक : इस अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत किस्मों के बीज नमूनों को पूरी अवधि तक सुरक्षा प्रदान करने हेतु प्राधिकरण द्वारा एक राष्ट्रीय जीन बैंक तैयार किया गया है। पंजीकृत किस्म का आवेदक, यदि पंजीकार या रजिस्ट्रार चाहेगा तो पंजीकृत बीज को इस जीन बैंक से पुनर्जीवन प्रदान करेगा।

बीज जमा करने की प्रक्रिया

बीज की उस मात्रा और उस विधि जो विशिष्टता, एकरूपता व स्थायित्व हेतु परीक्षण करने के लिए आवेदक द्वारा आवेदन पत्र देते समय आपूर्त की जानी है, का विवरण प्रत्येक फसल के लिए विशिष्टता, एकरूपता व स्थायित्व करने के लिए दिशा–निर्देशों में दिया गया है और इसे भारतीय पौधा किस्म जरनल में भी प्रकाशित किया गया है।

प्रश्न : इस अधिनियम में कृषकों के क्या अधिकार हैं ?

उत्तरः कृषि की दीर्घ और प्राचीन परंपरा के अंतर्गत किसानों ने विशिष्ट परीक्षणों तथा उत्पादों के मूल्य हेतु विभिन्न प्रकार के पौधों का चयन किया है। उन्होंने जंगली और खेती के लिए उपयुक्त बनाए गए दोनों प्रकार के जननद्रव्यों से किस्मों को चुना है, उन्हें सुधारा है और उनका संरक्षण किया है। अतः यह स्पष्ट है कि कृषकों और कृषक समुदाय ने नई किस्मों के विकास में अपना योगदान दिया है और साथ ही किस्मों के सुधार में उनका बौद्धिक योगदान भी है। यदि कृषक की कोई भी किस्म पीपीवी एवं एफआर अधिनियम 2001 और इसके अंतर्गत बनाए गए नियमों व विनियमों में बताए गए विशिष्टता, एकरूपता एवं स्थायित्व के मानदण्डों को पूरा करती है तो उसे पंजीकृत किया जायेगा।

1.किसानों को संरक्षित किस्म के बीज सहित अपनी किस्म को बचाने, उसका उपयोग करने, बोने, दुबारा बोने, उसका विनियम करने, उसकी भागीदारी या बिक्री का वैसा ही अधिकार होगा, जैसा इस अधिनियम के लागू होने से पूर्व था। तथापि, किसी किसान को इस अधिनियम के अंतर्गत किसी संरक्षित किस्म के ब्राण्ड युक्त बीज की बिक्री का अधिकार नहीं होगा।

2.किसानों को पारंपरिक किस्मों का प्रजनक, संरक्षक, परिरक्षक और उगाने वाला माना जाएगा।

3.किस्मों के विकास और भू–प्रजातियों के संरक्षण के लिए कृषकों को मान्यता प्रदान की जाएगी व उन्हे पुरस्कृत किया जाएगा।

4.प्रजनक, कृषकों को निश्चित स्थितियों में किसी किस्म के संभावित निष्पादन के संबंध में बताऐंगे। यदि प्राप्त उपज, बताई गई उपज से कम है तो किसानों को बताई गई उपज व प्राप्त हुई कम उपज के बीच के अंतर की क्षतिपूर्ति की जाएगी।

5.अज्ञानतावश अधिनियम का उल्लंघन होने पर किसानों को सुरक्षा प्रदान की जाएगी।

6.प्राधिकरण द्वारा किसानों से किसी भी कार्य के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।

प्रश्न : इस अधिनियम में समुदाय के क्या अधिकार हैं ?

उत्तरः 1 भू–प्रजातियों और वन्य प्रजातियों के आनुवंशिक संसाधनों के संरक्षण व परिरक्षण में पारंपरिक समुदायों की भूमिका को मान्यता प्रदान करना।

2 किसी किस्म के विकास में ग्राम अथवा स्थानीय समुदायों के योगदान की प्रतिपूर्ति करना और

3 पौधा किस्म संरक्षण प्राधिकरण द्वारा प्रतिपूर्ति की राशि निर्धारित करना और जीन निधि में वह राशि जमा करना।

तेजी से बढ़ रहा है खाद्य प्रसंस्करण उद्योग.. शरद पवार

हरियाणा: केन्द्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री शरद पवार ने आज कहा कि देश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग तेजी से बढ़ रहा है और यह किसानों के लिये फायदेमंद साबित हो रहा है। पवार ने यहां खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता और प्रबंधन के राष्ट्रीय संस्थान :एनआईएफटीईएम: का उद्घाटन करते हुये कहा खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में विनिर्माण और कृषि क्षेत्र से भी अधिक तेजी से वृद्धि हो रही है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन की व्यापक संभावनायें हैं। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग किसानों को मिलने वाले दाम और उपभोक्ता द्वारा चुकाये जाने वाले दाम के बीच अंतर को भी कम कर रहा है। पवार ने कहा कि तेजी से बढते इस उद्योग से मूल्यवर्धित कृषि उत्पादों का निर्यात कर विदेशी मुद्रा भी कमाई जा रही है।

विश्व स्तरीय खाद्य प्रसंस्करण शिक्षा और अनुसंधान संस्थान उद्घाटन करेंगे शरद पवार

हरियाणा प्रौद्योगिकी उपकरण और कुशल श्रम शक्ति के द्वारा ही खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र की संभावित क्षमता को कृषि और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री श्री शरद पवार खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में विश्व स्तरीय संस्थान एनआईएफटीईएम का को कुंडली हरियाणा में उद्घाटन करेंगे। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा और कई केन्द्रीय और राज्य मंत्री उद्घाटन समारोह में शामिल होंगे। भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमिता और प्रबंधन संस्थान (एनआईएफटीईएम) को मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया है। संस्थान ने अपना पहला शैक्षणिक सत्र इन गमिऱ्यों से शुरू किया है। यह संस्थान खाद्य प्रौद्योगिकी और प्रबंधन के क्षेत्र में बी. टेक, एम. टेक और पी.एचडी की डिग्री प्रदान करेगा। इस संस्थान के कामकाज का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यहां पर विभिन्न क्षेत्र जैसे डेरी उद्योग, अनाज आधारित उत्पाद, पशु प्रोटीन, पेय पदार्थ, मिष्ठान और फल तथा सब्जियों पर आधारित खाद्य पदार्थ पर ''विषय केन्द्र'' होंगे। इन क्षेत्रों के अलावा यहां पर प्रबंधन पैकेजिंग, खाद्य मानकों और परीक्षण जैसे विषय भी हैं।

एक सपने की उड़ान.....

घरडा केमिकल लिमिटेड

'हमारी कहानी साहसिक एवं समर्पित लोगों की कहानी हे , ऐसे लोगों की कहानी जो अपने को सामाजिक सेवाओ में समाये रखते हें ,जो उनके द्वारा किये शोध, उत्पादन एवं विकास के जरिये आविष्कारिक उपयोगी उत्पादों में नज़र आता हे , हमारे लोगों को गर्व हे उनके द्वारा किये गए सफल परिणामो का, शालीनता से किये गए बेहतर कायी को और भी बेहतर तरीके से करने का ,

घरडा कि कहानी शुरू होती हे सन 1964 से, अलग अलग स्थानो से आये लोगों द्वारा जहा काम, समन्वय एवं सिमित संसाधनो के कारन विरोधाभासी वातावरण हुआ करता था. लेकिन आज कहानी बिलकुल उलट ही हे .हम लगभग दो हज़ार लोग पहले से समृद्ध एवं विकसित वातावरण में परंपरागत एक ही ताने बाने में बुने परिवार की तरह समर्पण भाव से आज भी बने हुए हें . हम एक सम्मिश्रण हें व्यापार एवं लक्ष्य का , हकीकत एवं स्वप्न का, उपक्रम एवं व्यवसायिकता का.हमारी कहानी इन्ही लोगो के साथ उन लोगों को भी समर्पित हे जो इसे अपनाना चाहते है। '.

यह विचार है घरडा केमिकल लिमिटेड के संस्थापक, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. केकी . एच . घरडा के. जिनके दवारा एस कंपनी की नींव रखी गयी.

घरडा केमिकल लि. की स्थापना सन 1967 में अपनी शोध एवं अनुसन्धान आधारित कंपनी की छवि के रूप में हुई. आज भारत वर्ष में चार विभिन्न उत्पादन इकाइऱ्यों के साथ कृषि रसायनों का सफलता पूर्वक सञ्चालन करते हुए देश विदेश में अपने उत्पादों का विक्रय एवं वितरण कर रही हे. कंपनी के खाते में जहाँ ढेरो कृषि रसायन से सम्बद्ध राष्ट्रीय पुरस्कार हें वही कीटनाशक रसायनों के साथ ही डाई स्टफ , पशु औषधि एवं पॉलीमेर्स के उत्पादन के साथ सर्वप्रथम स्थान बनाये हे. शोध एवं अनुसन्धान को अपना आधार बनाते हुए घरडा केमिकल लि. का उदय सन 1964 में एक सूक्ष्म इकाई के रूप में हुआ जो आज एक प्रतिष्टित एवं सफल एग्रोकेमिकल कम्पनियों में जानी जाती हे. इसी योग्यता के जरिये तकनिकी रूप से सुदृढ़ घरडा केमिकल लि. उचित लगत एवं मूल्य आधारित उत्पाद बनाने का लक्ष्य रखते हुए देश विदेश में कड़ी प्रतिस्पर्धा वाले बाज़ार में अपना अहम् स्थान बरक़रार रखे हुए है।

कंपनी के वर्ष 2012 - 13 के तथ्यों पर नज़र डाले तो 6807 मि. के निर्यात के साथ 11294 मि. का विक्रय कारोबार कर आज देश की प्रमुख कृषि रसायन कम्पनियों में शुमार हे. यु.एस. पंजीकरण के जरिये कंपनी सभी अमेरिकी देशो के सात अफ्रीकी, अन्य यूरोपियन देशो, मध्य पूर्व देशो एवं ऑस्ट्रेलिया के साथ एशिया के देशो में भी अपने प्रतिष्ठित उत्पादों के द्वारा अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाये हुए हे. अपने ठोस लक्ष्यों के प्रति समर्पित रहते हुए एक प्रगतिशील कंपनी के रूप में जानी जाती हे .ये सब सम्भव हुआ हे घरडा केमिकल लि. की आविष्कारिक कार्य शैली एवं बेहतर कार्य भावना की सोच से, निरंतर शोध एवं अनुसन्धान द्वारा विकसित कृषि रसायन उत्पादों के बेहतर प्रदर्शन से. अपनी प्रगतिशील सोच, कार्य के प्रति कर्मठ एवं अनूठी त्याग व समर्पण भावना के धनी डॉ. केकी. एच . घरडा द्वारा सन 1964 रखी गयी नींव घरडा केमिकल लि. के रूप में आज नित नए आयाम स्थापित कर रही है।

ये डॉ. केकी एच घरडा द्वारा देखे गए एक सपने की सफल उड़ान ही तो है।

जयदीप माथुर

चीनी पर देर से पेराई का असर

नई दिल्ली पेराई के लिए मिलों के देर से चालू होने के कारण चालू चीनी वर्ष (अक्टूबर से सितंबर) के पहले तीन महीनों के दौरान चीनी उत्पादन २९ फीसदी गिरा है। चीनी उद्योग की शीर्ष संस्था भारतीय चीनी मिल संघ (इस्मा) ने कहा है कि चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में कुल उत्पादन ५७.४ लाख टन रहा है, जो पिछले साल की इसी अवधि में ८०.३ लाख टन था। हालांकि चीनी मिलों ने चालू सीजन के उत्पादन में संभावित गिरावट टालने के लिए पेराई तेज की है। चालू चीनी वर्ष में १५ दिसंबर तक उत्पादन ५० फीसदी कम था। इस सीजन में देशभर की चीनी मिलों ने नवंबर के अंतिम सप्ताह से गन्ने की पेराई शुरू की थी, जो सामान्य पेराई सीजन से दो सप्ताह देर थी। इसका कारण चालू वर्ष के लिए गन्ने की कीमतें तय करने को लेकर सरकार और उद्योग के बीच बना हुआ गतिरोध था। राज्य सरकारों उद्योग द्वारा किसानों को चुकाई जाने वाली गन्ने की न्यूनतम कीमत तय करती हैं, जिसे राज्य परामर्शी मूल्य (एसएपी) कहा जाता है। यह केंद्र सरकार द्वारा तय किए जाने वाले उचित एवं लाभकारी मूल्य (एफआरपी) से ज्यादा होता है। राज्य सरकारों के इस कदम का मिलें विरोध करती हैं क्योंकि चीनी से होने वाली आमदनी इसकी लागत से कम होती है। इस्मा ने कहा है कि धीमी शुरुआत के बाद दिसंबर के अंत में गन्ने की पेराई में तेजी आई और ३१ दिसंबर तक ४७६ मिलों ने सीजन २०१३-१४ के लिए पेराई शुरू कर दी थी। हालांकि पेराई शुरू करने वाली मिलों की संख्या पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में २३ कम है। फिर भी ऐसा लग रहा है कि चीनी उत्पादन पिछले साल का रुझान पकड़ रहा है

जूट के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि

नई दिल्ली 2400 रुपये प्रति क्विंटल होगा जूट का एमएसपी 2014-15 में 2300 रुपये प्रति क्विंटल था इसका एमएसपी 2013-14 में यहां होता है जूट का उत्पादन आसाम, बिहार, मेघालय, नागालैंड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा में जूट की खेती बड़े स्तर पर की जाती है प्रेट्र : नई दिल्ली... सरकार ने वर्ष 2014-15 के लिए जूट के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में 100 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि की है। इस वृद्धि के बाद अब जूट का न्यूनतम समर्थन मूल्य २४०० रुपये प्रति क्विंटल होगा। इस वृद्धि को आर्थिक मामलों पर गठित कैबिनेट कमेटी ने अपनी स्वीकृति गुरुवार को दी है। वित्त मंत्री पी चिदंबरम ने कमेटी की बैठक के बाद बताया कि टीडी-5 वैरायटी के जूट के न्यूनतम समर्थन मूल्य में 100 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि की गई है। पिछले साल जूट का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2300 रुपये प्रति क्विंटल था। ऊंचे ग्रेड का उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों को टीडी-३ व टीडी-4 ग्रेड पर मिलने वाला इनसेंटिव टीडी-५ की कीमत का क्रमश: 20 फीसदी व 8 फीसदी रहेगा। जूट के समर्थन मूल्य में इस वृद्धि को किसानों को जूट की खेती के प्रति आकर्षित करने और इसका उत्पादन बढ़ाने के मद्देनजर देखा जा रहा है। जूट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया इस बार भी टेक्सटाइल मंत्रालय की नोडल एजेंसी के रूप में कच्चे जूट की खरीद करेगा।

सोयाबीन में गिरावट की संभावना

नई दिल्ली 300 से 400 रुपये प्रति क्विंटल तक घट सकते हैं दाम 15.90 लाख टन का निर्यात हुआ है अप्रैल-नवंबर २०१३ के दौरान 14.05 लाख टन का निर्यात हुआ था अप्रैल-नवंबर 2012 के दौरान 40 लाख टन सोया खली का निर्यात लक्ष्य था 2013-14 के लिए सोया खली के निर्यात सौदों में पहले की तुलना में कमी आई है, जबकि सोया रिफाइंड तेल में भी उठाव सीमित मात्रा में ही हो रहा है। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान में सोयाबीन का बकाया स्टॉक भी ज्यादा है। ऐसे में सोयाबीन की मौजूदा कीमतों में 300 से 400 रुपये प्रति क्विंटल की गिरावट आने की संभावना है। जनवरी के बाद निर्यात सौदे सीमित मात्रा में ही हो रहे हैं। अभी तक मंडियों में 40 फीसदी फसल की आवक ही हुई है तथा किसानों और स्टॉकिस्टों के पास 60 फीसदी स्टॉक बचा हुआ है। उन्होंने बताया कि चालू वित्त वर्ष 2013-14 में कुल 40 लाख टन सोया खली के निर्यात का लक्ष्य था तथा अप्रैल से नवंबर के दौरान सोया खली के निर्यात में 13.16 फीसदी की बढ़ोतरी होकर कुल निर्यात 15.90 लाख टन का हुआ है। वित्त वर्ष 2012-13 के अप्रैल से नवंबर के दौरान 14.05 लाख टन का निर्यात हुआ था। साई सिमरन फूड्स लिमिटेड के डायरेक्टर नरेश गोयनका ने बताया कि सोया खली की निर्यात के साथ ही घरेलू मांग तो कमजोर है ही, सोया रिफाइंड तेल में भी उठाव सीमित मात्रा में ही हो रहा है।

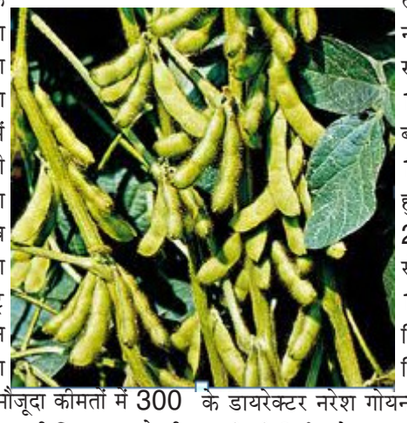

नेचुरल रबर में करें निवेश

नई दिल्ली '153.20 प्रति किलो था पांच दिसंबर 2013 को नेचुरल रबर का भाव '165.50 प्रति किलो हो गया 31 दिसंबर 2013 को इसका भाव केंद्र सरकार द्वारा नेचुरल रबर के आयात शुल्क में बढ़ोतरी किए जाने से आयात पड़ता महंगा हो जायेगा। जनवरी मध्य के बाद नेचुरल रबर के उत्पादन का पीक सीजन भी समाप्त हो जायेगा। ऐसे में घरेलू बाजार में नेचुरल रबर की कीमतों में सुधार आने की संभावना है। एनएमसीई में जनवरी महीने के वायदा अनुबंध में नेचुरल रबर की कीमतों में महीने भर में करीब 8 फीसदी की तेजी आई थी लेकिन मुनाफावसूली से पिछले तीन दिनों में हल्की गिरावट जरूर आई है। आगामी महीनों में नेचुरल रबर में खपत कंपनियों की मांग भी बढ? का अनुमान है। इसलिए वायदा बाजार में निवेशक नीचे दाम पर

खरीददारी करके नेचुरल रबर में मुनाफा कमा सकते हैं। एनएमसीई पर जनवरी वायदा अनुबंध में नेचुरल रबर का भाव 5 दिसंबर को त्र153.20 प्रति किलो था जो 31 दिसंबर को भाव बढ़कर 165.50 रुपये प्रति किलो हो गया। हालांकि ऊंचे भाव में निवेशकों की मुनाफावसूली आने से भाव 158.45 रुपये प्रति किलो पर बंद हुए। एग्री विशेषक अभय लाखवान ने बताया कि केंद्र सरकार नेचुरल रबर के आयात पर शुल्क में 10 फीसदी की बढ़ोतरी कर दी है जिससे आयात में कमी आने की आशंका है। नेचुरल रबर के घरेलू उत्पादन का पीक सीजन भी समाप्त हो रहा है। इसलिए घरेलू बाजार में मौजूदा कीमतों में तेजी की ही संभावना है। अभी तक नेचुरल रबर के आयात पर 20 रुपये प्रति किलो और 20 फीसदी जो भी न्यूनतम हो शुल्क लग रहा था। उधर अंतरराष्ट्रीय बाजार में नेचुरल रबर के दाम घरेलू बाजार के लगभग बराबर ही है। फरवरी महीने से नेचुरल रबर का पीक सीजन भी समाप्त हो रहा है

टैक्स छूट देकर सरकार रॉ शुगर निर्यात को बढ़ावा दे सकती है

नई दिल्ली विश्व बाजार में व्हाइट शुगर की सप्लाई ज्यादा होने के कारण भारतीय मिलों को इसके निर्यात दिक्कतें आ रही हैं। इस वजह से केंद्र सरकार चीनी मिलों को रॉ शुगर के निर्यात के लिए वित्तीय प्रोत्साहन दे सकती है। अगर मिलों को वित्तीय मदद मिलती है तो वे विश्व बाजार में बड़े पैमाने पर निर्यात सौदे कर सकती हैं। इससे विदेश में भाव और गिर सकते हैं। इस समय रॉ शुगर के दाम तीन साल से ज्यादा समय के न्यूनतम स्तर पर बने हुए हैं। भारत पारंपरिक रूप से व्हाइट शुगर का ही निर्यात करता है। लेकिन विश्व बाजार में इसकी सप्लाई काफी ज्यादा है। एशिया और अफ्रीका में रिफाइनिंग क्षमता बढ? की वजह से रॉ शुगर के निर्यात की ज्यादा अच्छी संभावनाएं हैं। चीनी के मामले में भारत सबसे बड़ा उपभोक्ता और दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। रॉ शुगर का निर्यात बढ़ता है तो विश्व बाजार में दाम और घटना तय है। इस समय रॉ शुगर के दाम तीन साल से ज्यादा समय के न्यूनतम स्तर पर चल रहे हैं। चीनी के उत्पादन में सब्सिडी देने से यह मामला विश्व व्यापार संगठन (डबूयूटीओ) में उठ सकता है। लेकिन सरकारी अधिकारियों का माना है कि उत्पादन पर किसी तरह की रियायत दिए जाने से डबूयूटीओ के नियमों का उलंघन नहीं होगा। गन्ने का खरीद मूल्य बढ़ाए जाने की वजह से मिलें व्हाइट शुगर के निर्यात सौदे करने के लिए कोई डिस्काउंट नहीं दे सकती हैं क्योंकि इसकी उत्पाद लागत ज्यादा हो गई है।

गेहूं उत्पादन ज्यादा रहने की उम्मीद

नई दिल्ली ..पिछले साल की 948 लाख टन रिकॉर्ड पैदावार से ज्यादा उपज संभव: अनवर बुवाई क्षेत्रफल में हुई बढ़ोतरी के साथ ही मौसम भी अनुकूल होने से केंद्र सरकार को चालू रबी में गेहूं की रिकॉर्ड पैदावार होने का अनुमान है। फसल वर्ष 2011-12 में देश में गेहूं की रिकॉर्ड पैदावार 948.8 लाख टन की हुई थी। चालू रबी में गेहूं की बुवाई बढ़कर 311.86 लाख हैक्टेयर में हो चुकी है। एसोचैम द्वारा सोमवार को दिल्ली में आयोजित छठी एग्री-बिजनेस समिट के मौके पर कृषि राज्य मंत्री तारिक अनवर ने पत्रकारों से कहा कि गेहूं के बुवाई क्षेत्रफल में बढ़ोतरी हुई है जबकि मौसम भी अभी तक अनुकूल बना हुआ है। ऐसे में गेहूं की रिकॉर्ड पैदावार होने का अनुमान है। कृषि मंत्रालय के अनुसार वर्ष 2011-12 में देश में गेहूं की रिकॉर्ड पैदावार 948.8 लाख टन की हुई थी जबकि बीते वर्ष 2012-13 में गेहूं की पैदावार 924.6 लाख टन की हुई थी। उन्होंने बताया कि हरियाणा में एकाध जगह सफेद रतुआ बीमारी लगने की खबरें जरूर मिली हैं लेकिन सरकार ने किसानों को इससे बचाव के लिए कीटनाशक उपलब्ध कराने के साथ ही जागरूक कर दिया है। कृषि वैज्ञानिक ने इसकी रोकथाम के लिए जरूरी कदम उठाए हैं, साथ ही राज्य सरकार को भी सचेत रहने को कहा गया है। कृषि मंत्रालय के अनुसार चालू रबी में गेहूं की बुवाई बढ़कर 311.86 लाख हैक्टेयर में हो चुकी है जबकि पिछले साल की समान अवधि 291.27 लाख हैक्टेयर में हुई थी। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात में गेहूं के बुवाई क्षेत्रफल में पिछले साल की तुलना में बढ़ोतरी हुई है।

रबी में बेहतर बुवाई से पैदावार बढे का अनुमान

नई दिल्ली, मौसम अनुकूल रहने से भी फसलों को मिलेगा फायदा चालू रबी में गेहूं, चना और सरसों के बुवाई क्षेत्रफल में हुई बढ़ोतरी से इनकी पैदावार बढे का अनुमान है। कृषि मंत्रालय के अनुसार चालू रबी में फसलों की कुल बुवाई बढ़कर 619.04 लाख हैक्टेयर में हो चुकी है जो पिछले साल की समान अवधि के 587.01 लाख हैक्टेयर से ज्यादा है। कृषि मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि रबी की प्रमुख फसलों गेहूं, चना और सरसों का बुवाई रकबा पिछले साल से बढ़ा है। मौसम भी फसलों के अनुकूल ही है। ऐसे में चालू रबी में खाद्यान्न की कुल पैदावार बढ? का अनुमान है। रबी की प्रमुख फसल गेहूं की बुवाई बढ़कर 311.86 लाख हैक्टेयर में हो चुकी है जबकि पिछले साल इस समय तक 291.27 लाख हैक्टेयर में ही हुई थी। चने की बुवाई पिछले साल के 92.68 लाख हैक्टेयर से बढ़कर 101.83 लाख हैक्टेयर में और सरसों की बुवाई 66.22 लाख हैक्टेयर से बढ़कर 70.35 लाख हैक्टेयर में हो चुकी है। दलहन की बुवाई चालू रबी में पिछले साल के 147.35 लाख हैक्टेयर से बढ़कर 155.16 लाख हैक्टेयर में हो चुकी है। रबी दलहन में चना की बुवाई तो बढ़ी है लेकिन उड़द और मूंग की बुवाई पिछले साल से घटी है। उड़द की बुवाई चालू रबी 7.55 लाख हैक्टेयर में हुई है जबकि पिछले साल इस समय तक 8.98 लाख हैक्टेयर में हुई है। मूंग की बुवाई भी पिछले साल के 5 लाख हैक्टेयर से घटकर 4.67 लाख हैक्टेयर में ही हुई है। चालू रबी में देशभर में 86.22 लाख हैक्टेयर में तिलहनों की बुवाई हो चुकी है जबकि पिछले साल इस समय तक 82.74 लाख हैक्टेयर में बुवाई हुई थी। सरसों की बुवाई तो बढ़ी है लेकिन मूंगफली और सनफ्लावर की बुवाई घटी है। मूंगफली की बुवाई पिछले साल के 6.55 लाख हैक्टेयर से घटकर 5.99 लाख हैक्टेयर में और सनफ्लावर की बुवाई पिछले साल के 4.50 लाख हैक्टेयर से घटकर 3.80 लाख हैक्टेयर में हुई है

सटोरिया सर्किट में फंसी अरंडी

नई दिल्ली लगातार दो दिन अपर सर्किट लगने के बाद आज अरंडी वायदा फिर लोअर सर्किट में फंस गया। अरंडी की कीमतें अब पिछले महीने के स्तर पर आ गई हैं। नई फसल की आवक और एफएमसी की सख्ती के कारण चालू महीने में अरंडी कीमतों में दोबारा 20 फीसदी तक की गिरावट आ सकती है। अरंडी में सटोरियों की सक्रियता से पिछले 9 कारोबारी दिनों में सात बार सर्किट लग चुका है। पिछले एक महीने में अरंडी में भारी उतार-चढ़ाव रहा है। महीने की शुरुआत में कीमतें 16 फीसदी ऊपर जाकर करीब इतने फीसदी ही गिरीं। कीमतें 10 फीसदी उछलने के बाद चार फीसदी का लोअर सर्किट लगा। इस सप्ताह के शुरुआती तीन कारोबारी दिनों में करीब 10 फीसदी से ज्यादा उछाल इसमें आई थी। लोअर सर्किट से एनसीडीईएक्स पर अरंडी जनवरी वायदा 4,420 रुपये, फरवरी 4,503 रुपये और अप्रैल 4,583 रुपये प्रति क्विंटल हो गया है। इसकी कीमतों में तेजी की वजह इस बार अरंडी उत्पादन 40 फीसदी घटने और कीमतों में गिरावट के लिए आपूर्ति में तेजी को जिम्मेदार बताया जा रहा है।

इस साल रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन की उम्मीद

नई दिल्ली ..कृषि मंत्री शरद पवार ने आज कहा कि इस साल देश का खाद्यान्न उत्पादन, 25.92 करोड़ टन के पिछले रिकॉर्ड स्तर को पार कर जाने की संभावना है। आईसीएआर की 85वीं वार्षिक आम सभा को संबोधित करते हुए पवार ने कहा, 'मुझे विश्वास है कि फरवरी में जब हमें दूसरा अग्रिम अनुमान मिलेगा, हम सर्वकालिक रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन की ओर बढ़ रहे होंगे।' उन्होंने कहा कि गेहूं जैसी रबी की फसलों की बुवाई के संबंध में आंकड़े बहुत उत्साहवर्धक है। देश ने 2011-12 फसल वर्ष (जुलाई-जून) में 25.92 करोड़ टन का रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन दर्ज किया था। हालांकि, देश के कुछ भागों में सूखा पड? से 2012-13 में उत्पादन मामूली गिरावट के साथ 25.53 करोड़ टन रह गया था। इस साल, अच्छे मानसून से खरीफ (गर्मी) और रबी (जाड़े) फसलों की बुवाई में सुधार आया है जिससे रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन की संभावना बढ़ गई है।

तरबूज उत्पादन की उन्नत तकनीक

डॉ. राकेश कुमार शर्मा
विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी)

.डॉ. स्वप्निल दुबे
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन

तरबूज ;कद्दूवर्गीय सब्जियों के अन्तर्गत आता है। तरबूज गर्मियों की एक प्रमुख फसल है जिसे लोग इसकी मिठास, सुगन्ध और प्यास बुझाने के गुण के कारण बड़े चाव से खाते हैं। यह फल बड़ी आसानी से सस्ते में साधारण से साधारण व्यक्ति की पहुंच में है। तरबूज के गूदे एवं रस में नमक एवं काली मिर्च डालकर सेवन करने से ग्रीष्मकाल में शरीर को ठण्डक एवं ताजगी मिलती है। तरबूज के बीजों को ठण्डाई एवं शरबत बनाने में काम में लिया जाता है। इसके 100 ग्राम खाने वाले भाग में 92 प्रतिशत जल, 0.2 प्रतिशत प्रोटीन, 0.3 प्रतिशत मिनरल एवं 0.7 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेटस पाये जाते हैं।

जलवायू–तरबूज के लिए गर्म जलवायू उपयुक्त रहती है। इसके लिए पाला रहित, उच्च तापमान, शुष्क मौसम, तेज धूप, गर्म दिन एवं ठण्डी रात आवश्यक है।

भूमि–अच्छी जल निकास वाली, बलुई दोमट या दोमट मिट्टी इसकी खेती के लिए उपयुक्त रहती है। भूमि का चभ 5.5–6.5 उपयुक्त रहता है।

उन्नत किस्में–

1.अर्का मनिकः–यह किस्म पाउडरी मिल्डयू, एन्थ्रेक्नोज रोग के प्रतिरोधी किस्म है। फल गोलाकार एवं अण्डाकार होते है। जिसका वजन 6 किग्रा तक होता है। गूदा गहरे लाल रंग का होता है। बुवाई के 90–100 दिन में तैयार होती है तथा उपज 500–600 क्विंटल/हैक्टेयर तक हो जाती है।

2.अर्का ज्योतिः–यह मध्यम मौसम की संकर किस्म है जिसका फल गोल, गहरा हरा तथा फल का वजन 5–6 किग्रा तक होता है। पर्याप्त मिठास युक्त किस्म है जिसमें टी.एस.एस. 11–12 प्रतिशत तक होता है।

3.सुगर बेबीः–फल छोटा 2–3 किग्रा वजन के गोल होते हैं, छिलका गहरे हरे रंग का जिस पर काली धारियाँ होती है। गूदा गहरा गुलाबी रंग का तथा मिठास युक्त होता है, जिसका टी. एस.एस. 11–13 प्रतिशत तक होता है।

4.आशाही यामेटोः–फल मध्यम आकार के 6–8 किग्रा में होते हैं छिलक हल्के हरे रंग के जिन पर हल्की धारियाँ होती है। गूदा गुलाबी रंग का मीठा तथा बीज छोटे होते हैं। फसल 90–95 दिन में तैयार हो जाती है। औसत उपज 200–250 क्विंटल/हैक्टेयर रहती है।

5.दुर्गापुरा केशरः–देरी से पकने वाली किस्म है जिसका हरा छिलका जिस पर गहरे हरे रंग की धारियां होती है। फल अण्डाकार तथा गूदे का रंग गहरा लाल व स्वादिष्ट होता है। फल का औसत वजन 4–5 किग्रा व उपज 300–400 क्विंटल/हैक्टेयर मिल जाती है।

6.दुर्गापुरा मीठाः–हल्का हरा रंग का गोल फल जिन पर हल्की हरी धारियाँ होती है। फल का औसत वजन 7–8 किग्रा तथा प्रति हैक्टेयर पैदावार 350–400 क्विंटल तक होती है।

इसके अलावा कई निजि बीज उत्पादक कम्पनियों के भी क्षेत्र के अनुसार किस्में विकसित कर रखी हैं किसान भाई इनका प्रयोग भी कर सकते हैं।

बुवाई का समयः–फरबरी–मार्च, लो–टनल पॉली हाऊस में दिसम्बर–जनवरी में की जा सकती है।

बीज की मात्राः–छोटे बीज वाली किस्मों के लिए 3–3.5 किग्रा/हैक्टेयर तथा बड़े बीज वाली किस्मों के लिए 4 किग्रा/हैक्टेयर बीज की आवश्यकता रहती है।

खाद एवं उर्वरक की मात्राः–

खाद एवं उर्वरक मात्रा प्रति हैक्टेयर

1.गोबर की खाद 200–250 क्विंटल

2.नत्रजन 100 किग्रा

3.फास्फोरस 50 किग्रा

4.पोटाश 40 किग्रा

देशी खाद, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की 1/3 मात्रा बुवाई के समय भूमि में मिलाकर देवें तथा शेष नत्रजन की मात्रा को दो बराबर भागों में बांटकर टोप ड्रेसिंग ;खड़ी फसल मेंद्ध के रूप में प्रथम बार बुवाई के 25 से 30 दिन बाद व दूसरी बार फूल आने के समय देना चाहिये।

खेत की तैयारीः–खेत में अच्छी गहरी जुताई करके मिट्टी को भुरभुरी बना लें तथा गोबर की खाद मिलायें।

बुवाई का तरीकाः–खेत में लगभग 45 सें.मी. चौड़ी तथा 30–40 सें.मी. गहरी नालियां बना लें। एक नाली से दूसरी नाली की दूरी फसल की बेल की बढ़वार के अनुसार 1.5 मी. से 5 मी. तक रखें। बुवाई से पहले नालियों में पानी लगा दें। जब नाली में नमी की मात्रा बीज बुवाई के लिए उपयुक्त हो जाए तो बुवाई के स्थान पर मिट्टी भुरभुरी करके 0.50 से 1.0 मी. की दूरी पर बीज बोएं।

पॉली हाउस विधि से अगेती खेती :तरबूज की अगेती फसल तैयार करने के लिए पॉली हाउस में जनवरी माह में झोंपड़ी के आकार का पॉली हाउस बनाकर पौध तैयार कर लेते हैं। पौधे तैयार करने के लिए 15□10 सें.मी आकार की पॉलीथीन की थैलियों में 1:1:1 मिट्टी, बालू व गोबर की खाद भरकर जल निकास की व्यवस्था हेतु सूजे की सहायता से छेद कर लेते हैं। बाद में इन थैलियों में लगभग 1 सें.मी. की गहराई पर बीज की बुवाई करके बालू की पतली परत बिछा लेते हैं तथा हजारे की सहायता से पानी लगाते हैं। लगभग 4 सप्ताह में पौधे खेत में लगाने के योग्य हो जाते हैं। जब फरवरी माह में पाला पड़ने का डर समाप्त हो जाये तो पॉलीथीन की थैली को ब्लेड से काटकर हटाने के बाद पौधे की मिट्टी के साथ खेत में बनी नालियों की मेंड पर रोपाई करके पानी लगाते हैं। इस प्रकार लगभग एक से डेढ़ माह बाद अगेती फसल तैयार हो जाती है जिससे किसान अगेती फसल तैयार करके ज्यादा लाभ कमा सकता है।

सिंचाईः–पहली सिंचाई बुवाई के तुरंत बाद करें इसके बाद जलवायू एवं मिट्टी के आधार पर आवश्यकतानुसार प्रति सप्ताह नालियों में सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रणः–शुरू के 45 दिन तक खेत में निंदाई–गुड़ाई करते रहें।

बेल की कटाई–छंटाई–बेल की बहुत ज्यादा बढ़वार को छंटाई करके वानस्पतिक वृद्धि कम की जा सकती है, जिससे मादा पुष्पों की संख्या बढ़ जाती है।

फलों की तुड़ाईः– अन्य सब्जियों की तरह कच्चे फल तोड़ने पर अपने वास्तविक गुणों से रहित फल मिलते हैं, अतः इन्हें पकने के बाद ही तोड़ना चाहिए। जिससे स्वादिष्ट एवं गुणों से भरपूर फल मिल सकें।

पौध संरक्षण

कीट नियंत्रणः–

1) लाल भृंग (रेड पंपकिन बीटल)–यह लाल रंग का छोटा कीट होता है तथा अंकुरित तथा नई पत्तियों को खाकर छलनी कर देता है। इसके प्रकोप से कई बार पूरी फसल नष्ट हो जाती है।

प्रबंधन–

1. फसल खत्म होने पर बेलों को खेत से हटाकर नष्ट कर दें।

2. फसल की अगेती बुवाई से कीट के प्रभाव को कम किया जा सकता है।

3. संतरी रंग के भृंग को सुबह के समय इकट्ठा करके नष्ट कर दें।

4. कार्बेरिल 50 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम/लीटर या एन्डोसल्फान 35 ई.सी. 2 मि.ली/लीटर या एमामेक्टिन बैंजोएट 5 एस.जी. 1 ग्राम/2 लीटर या इन्डोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 1 मि.ली./2 लीटर का छिड़काव करें।

5. भूमिगत शिशुओं के लिए क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. 2.5 लीटर/हेक्टेयर हल्की सिंचाई के साथ इस्तेमाल करें।

2) फल मक्खीः–इस कीट की मक्खी फलों में अंडे देती है तथा शिशु अंडे से निकलने के तुरंत बाद फल के गूदे को भीतर ही भीतर खाकर सुरंगें बना देते हैं।

प्रबंधन–

1. ग्रसित फलों को भी एकत्रित करके नष्ट कर दें।

2. मैलाथियॉन 5. ई सी या डाईमिथोएट 30 ई सी एक मिलीलीटर का प्रति लीटर पानी की दर से छिड़कव करें। आवश्यकतानुसार 10 से 15 दिन बाद छिड़काव को दोहरावें।

3. सफेद मक्खी (व्हाइट लाई)–इस कीट के शिशुओं व वयस्कों के रस चूसने से पत्ते पीले पड़ जाते हैं। इनके मधुबिन्दु पर काली फंफूद आने से पौधों की भोजन बनाने की क्षमता कम हो जाती है। इस कीट की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 1 मि.ली./3 लीटर या डाइमेथोएट 30 ईसी. 2 मि.ली./लीटर का छिड़काव करें।

4. चेंपा (एफिड) चेपा लगभग सभी कद्दू वर्गीय फसलों पर आक्रमण करते हैं। ये पौधों के कोमल भागों से रस चूसकर फसल को हानि पहुंचाते हैं।

नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 1 मि.ली./3 लीटर या डाइमेथोएट 30 ई.सी. 2 मि.ली./लीटर या क्वनलफॉस 25 ई.सी. 2 मि.ली/लीटर का छिड़काव करें।

रोग नियंत्रणः–

1) पाउडरी मिल्डयू (तुलासिता)–पत्तियों की ऊपरी सतह पर हल्के पीले धब्बे दिखाई देते हैं तथा नीचे की सतह पर कवक की वृद्धि दिखाई देती है।

नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक 2 ग्राम या डायनोकेप 1.0 मिली. या मेन्कोजेब 2 ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

2) एन्थ्रेक्नोजः–इस बीमारी की वजह से फलों एवं पत्तियों पर गहरे भूरे से काले रंग के धब्बे बन जाते हैं रोग ग्रस्त भाग सूखने लगता है।

रोकथाम के लिए मेन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

3) विषाणु रोग

विषाणु रोग एफिड्ससे संचारित होता है तथा रोग का आक्रमण होने पर पत्ती की लम्बाई चौड़ाई कम हो जाती है। ग्रसित पौधे के फल भद्दे रंग के व बेडोल आकार के हो जाते है।

नियंत्रण हेतु रोग के लक्षण दिखाई देते ही पौधे को उखाड़ कर जला देवें।

विषाणु ग्रसित पौधे से बीज प्राप्त न करें। रोग रोधी किस्म का चुनाव करें।

मोयले की रोकथाम के लिये फास्फोमिडान 85 एस एल 0.3 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से 10 से 15 दिन के अन्तर पर छिड़काव करें।

गेहूँ की फसल में खरपतवार नियंत्रण

डा0 बी0 एन0 सिंह
गेहूँ अभिजनक
नरेन्द्र देव कृशि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय,
कुमारगंज, फैजाबाद–224 229 (उत्तर प्रदेष)

किसान भाइयों गेहूँ की फसल से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए खरपतवार नियंत्रण अवष्य करें, यह पौधों के भोजन, पानी को स्वयं प्रयोग कर पैदावार में कमी कर देते है। गेहूँ की फसल में पाए जाने वाले खरपतवार मुख्यतया दो श्रेणीयों में रखे जा सकते है। एक चौडी पत्ती वाले एवू देसरे संकरी पत्ती वाले। गेहूँ में उगने वाले मुख्य खरपतवार है गुल्ली डंडा/गेहूँसा/मंडूसी, जंगली जई, बथुवा, हिरनखुरी, सत्यानाषी, कष्णनील एवम मोथा आदि। मैदानी क्षेत्रों में रबी फसलों में सबसे भंयकर खरपतवार मंडूसी है। यह मुख्यतयः धान–गेहूँ फसल चक्र का खरपतवार है। गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण निम्न विधियों से किया जा सकता है।

सस्य विधिः

मेडों एवम नालियों को साफ सुथरा रखें।

फसल चक्र को परिर्वतित करते रहें एवम साल में कम से कम एक बार बरसीम अथवा जई की फसल को चारे के तौर पर उगाए।

फसल विर्धिीकरण का पालन करें।

जरो टिलेज विधि से गेहूँ उत्पादन करें।

गेहूँ की जल्दी बढने वाली किस्मों का चुनाव करें।

बेड प्लांटर अथवा रोटोवेटर से बुवाई करने से खरपतवार कम उगते है।

साफ सुथरे, स्वस्थ एवम खरपतवार रहित उच्च गुणवत्त वाले बीज का प्रयोग करें।

खाद को बीज के 2–3 सेमी नीचे डाले और बुवाई के लिए सीड ड्रिल का प्रयोग करें।

पौधों की संख्या बढाने के लिए आडी–तिरछी विधि से बुवाई करें।

यंत्रों द्वारा नियंत्रणः

गेहूँ की बुवाई के एक माह के उपरांत यदि खेत में खरपतवार दिखाई दे तो निराई गुडाई करें। बुवाई के 30–35 दिन के उपरान्त लाइनों में बोए गेहूँ की गुडाई खुरपे या हैडहो इत्यादि से की जा सकती है। परन्तु यदि बुवाई लाइनों में नही की गई हो और खरपतवार की संख्या बहुत अधिक हो तो ऐसी स्थिति में रसायनिक नियंत्रण ही श्रेयस्कर होगा और उसमें लागत भी कम आएगी। रसायनिक विधि से खपतवार नियंत्रण में कम मजदूरों की आवष्यकता पडती है और ज्यादा कारगर होता है।

रसायनों के प्रयोग द्वारा नियंत्रणः

रसायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि इससे खरपतवार नियंत्रण आर्थिक तौर पर लाभप्रद रहता है। परन्तु इस विधि से खरपतवार नियंत्रण में आवष्यक बात यह है कि किसान भाइयों द्वारा उन्ही रसायनों का प्रयोग किया जाना चाहिए जिनकी संस्तुति विषेशज्ञों द्वारा की गई है। इस विधि से खरपतवार निम्नलिखित विधियों से नियंत्रित किए जा सकते है।

1. गेहूँ उगने से पहलेः

गेहूँ के जमाव से पूर्व प्रयोग में लाए जाने वाला खरपतवार नाषी है स्टाम्प 30 ई0सी (पैन्डामैथालीन) जिसे 3–5 लीटर (1000 ग्रा0 ए0आई0) प्रति हैक्टेयर की दर से 700–750 लीटर पानी में घोल कर बोने के 0–3 दिन के अन्दर छिडकाव करना चाहिए।

2. गेहूँ के जमाव के बाद

सकरी तथा चौडी पत्ती वाले खरपतवारः

क्र लीडर (सल्फासल्फ्यूरान) को 33.3 ग्रा0 प्रति हैक्टेयर (25 ग्रा ए0 आई0) की दर से 250–300 लीटर पानी में घोल कर छिडकाव करना चाहिए।

क्र सेन्कोर 70 डब्ल्यू पी (मेट्रीब्यूजीन) को 250 ग्रा0 (175 ग्रा0 ए0एआई0) प्रति हैक्टयर की दर से 500 लीटर पानी में घोल बना कर छिडकाव करना चाहिए।

यहॉ ध्यान देने योग्य बात सह है कि इन रसायनों का प्रयोग अत्यंत सावधानी पूर्वक करना चाहिए। हर हाल में इनका छिडकाव बुवाई के 35 दिन के अंदर कर दिया जाना चाहिए अन्यथा गेहूँ की फसल पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।

सकरी पत्ती वाले खरपतवारः

क्र टापिक 15 डब्ल्यू0 पी0 (क्लोडीनाफाप) का 400 ग्रा0 (600 ग्रा0 ए0 आई0) प्रति हैक्टेयर की दर से 250–300 लीटर पानी में घोल कर छिडाकव करना चाहिए।

क्रप्यूमासुपर 10 ई0 सी0 (फिमोक्सापोपइथाईल) के 800–1200 मि0ली0 (80–120 ग्रा0 ए0 आई0प्रति है0) की दर से 250–300 लीटर पानी में घोल कर छिडकाव करें।

क्रग्रास्प 10 ईसी (ट्रालकोक्सीडीम) का 3500 मि0ली0 प्रति है0 (350 ग्रा0 ए0 आई0) की दर से 250–350 लीटर पाली में घोल कर छिडकाव करें।

खरपतवारों के प्रयोग के सम्बन्ध में सावधानियांः

क्रमिश्रित फसल जैसे गेहूँ में सरसों की बुवाई हो तो लीडर या अन्य खरपतवार का प्रयोग न करें।

क्रदवाई के प्रयोग की संस्तुत विधि को अपनाकर छिडकाव करें। रेत, यूरिया या मिटटी में मिला कर प्रयोग नहीं करना चाहिए।

क्रपूरे खेत में एक जैसा छिडकाव करें।

क्रखरपतवार रसायनों के प्रयोग के समय खेत में प्र्याप्त नमी होनी चाहिए।

क्रदवा का प्रयोग दोपहर बाद करना लाभकारी होता है जब पत्ती पर ओस सूख जाय।

क्रकेवल फ्लैट फैन नॉजल का इस्तेमान करें।

पशुओं से अधिक समझदार नहीं हैं मनुष्य: विशेषज्ञ

मेलबर्न : यदि आप यह सोचते हैं कि आप अन्य जीवों से अधिक समझदार हैं तो शायद यह सही नहीं हैं। वैज्ञानिकों ने कहा है कि मनुष्य हजारों वर्षों से यह कहकर खुद को धोखा देता आया है कि वह शेष प्राणिजगत से अधिक समझदार है, जबकि इसके विपरीत बात साबित करने वाले साक्ष्य बढते जा रहे हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ एडीलेड में स्कूल ऑफ मेडिकल साइंसेस के डा. आर्थर सैनियोतिस ने कहा, हजारों वर्षों से सभी धर्मों के साथ साथ जाने माने विद्वान भी बार बार यही कहते आए हैं कि मनुष्य प्राणिजगत में सबसे बुद्धिमान हैं। उन्होंने कहा, वैज्ञानिकों ने हमें बताया कि पशुओं में ज्ञान संबंधी कई क्षमताएं हैं जो मनुष्यों से बेहतर हैं। सैनियोतिस ने कहा, मनुष्य के दर्शन शास्त्र और विज्ञान ने इस विश्वास को मजबूत किया है कि मनुष्य अधिक समझदार है। सभी विचारकों में संभवत: सबसे प्रभावशाली अरस्तु ने भी यही तर्क दिया कि मनुष्य तर्क करने की विशेष क्षमता के कारण अन्य जीवों से अधिक समझदार है। प्रोफेसर मैसीज हेन्नेबर्ग ने कहा कि पशुओं में अकसर कई क्षमताएं होती हैं जिन्हें मनुष्य समझ नहीं पाते। हेन्नेबर्ग ने कहा, वे शायद हमें नहीं समझ सकते और हम उन्हें नहीं समझते। इसका यह अर्थ नहीं है कि हमारी 'बुद्धिमता' का स्तर उंचा है। वे बस हमसे अलग हैं। उन्होंने कहा, मनुष्यों ने अपनी भाषा और तकनीक विकसित करने के कारण अन्य जीवों की विभिन्न प्रकार की समझ को कम करके आंका है।

पशु ऊतक से बनाया कृत्रिम कान

वाशिंगटन : हाल ही में वैज्ञानिकों ने कथित तौर पर पशु ऊतक से हू-ब-हू मानव कान विकसित करने में सफलता पा ली है। वैज्ञानिकों का कहना है कि वह किसी रोगी की कोशिका से भी पूरे कान को विकसित करने में जल्द ही सफलता पा लेंगे। बीबीसी ने बोस्टन स्थित मैसाचुसेट्स जनरल अस्पताल के शोधकर्ताओं के हवाले से कहा है कि इस प्रकार विकसित किया गया कान एकदम वास्तविक कान के समान लचीला है। चिकित्सा विज्ञान में ऊतक अभियांत्रिकी उभरती हुई नई पद्धति है, जिसमें मानव के वैकल्पिक अंगों को विकसित किया जाता है, ताकि क्षतिग्रस्त अंगों को बदला जा सके। यह शोध पत्र विज्ञान पत्रिका रॉयल सोसायटी इंटरफेस में प्रकाशित हुआ है। शोधपत्र में कहा गया है कि अमेरिकी अनुसंधानकर्ताओं का दल कृत्रिम कान के निर्माण में लगा हुआ है, ताकि जन्म से ही कान के अविकसित रहने या दुर्घटना में कान खो देने वाले मनुष्यों की मदद की जा सके।

इससे पहले अनुसंधानकर्ताओं ने किसी बच्चे के कान के आकार के कान को एक चूहे पर विकसित करने में सफलता पाई थी। हालिया अनुसंधान में उन्होंने गाय और भेड़ के ऊतकों की मदद से तार की सहायता से कान के आकार की ३डी संरचना पर कृत्रिम कान विकसित करने में सफलता पाई है.

राजस्थान गो-सेवा आयोग के लिए प्रशासक नियुक्त

जयपुर, 11 जनवरी। राज्य सरकार ने शनिवार को आदेश जारी कर राजस्थान गो-सेवा आयोग के अध्यक्ष पद से श्रीमती पूनम गोयल को तुरंत हटाया है।

एक अन्य आदेश के तहत राजस्थान गो-सेवा आयोग के अपाध्यक्ष श्री चिरंजीलाल बड़ाया का त्याग पत्र स्वीकृत किया है।

वहीं एक अन्य आदेशानुसार शासन सचिव पशुपालन, मत्स्य एवं डेयरी विकास विभाग को राजस्थान गो-सेवा आयोग का प्रशासकअग्रिम आदेशों तकनियुक्त किया है।

पशुओं के पाचन सम्बन्धी बीमारियों में देशी औषधियों का उपयोग

डा0 विद्यासागर' डा0 रवि प्रकाश मौर्य++एवं प्रदीप कुमार+++

हमारे देश में अधिकांश पशुपालक छोटें एवं सीमान्त कृषकों की श्रेणी में आते हैं, जिनके पास वैज्ञानिक विधि से पशुपालन विधि से पशुपालन करने के लिये पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं होता है। अधिकांश पशुपालकों के पास अपने रोगी पशु के उपचार के लिये बाजर में उपलब्ध दवाइयों को खरीदने की क्षमता नहीं होती हैं। साथ ही पशु को गैर सरकारी चिकित्सक के पास ले जाने के लिये भी शुल्क की आवश्यकता होती है, जो वह वहन नहीं कर पाते है। इसलिये वे गॉव में ही उपलब्ध अनभिज्ञ चिकित्सकों से अपने पशु का उपचार कराते हैं जिसके कारण कई बार उनका बहुत अधिक नुकसान हो जाता हैं।

इसलिये पशुपालकों को कुछ साधारण बीमारियों की जानकारी स्वयं होनी चाहिये, जिसके आधार पर वे अपने पशु को प्राथमिक चिकित्सा प्रदान कर सकें साथ ही कुछ देशी दवाईयाँ जिनकी गुणवत्ता वैज्ञानिक समुदाय में जानी एवं परखी जा चुकी है उनकी भी जानकारी पशुपालक को होनी चाहिये। प्रस्तुत लेख में पशुओं के पाचन सम्बन्धी बीमारियों एवं उनके देशी उपचार के सम्बन्ध में जानकारी दी जा रही हैं।

पशुओं में अपच का उपचार:–

चूँकि पशुओं के आहार में भूसा, पुआल और कड़वी जैसे सूखे चारे की मात्रा अधिक होती है तथा नमक व खनिज मिश्रण खिलाने की प्रथा कम है, इसलिये पशुओं में अपच की समस्या प्रायः पाई जाती है। आहार के अतिरिक्त पेट में परजीवी उत्पन्न होने पर भी पशुओं में अपच के लक्षण उत्पन्न होते हैं। इस रोग से पीड़ित पशुओं में खाने की रूचि नहीं रहती हैं। पशु सुस्त रहते हैं तथा धीरे–धीरे जुगाली करना कम या बंद कर देते हैं, पेट की बड़े भाग रोमन्थी की प्राकृतिक संकुचन क्रिया मंद हो जाती है। अगर बांयी ओर पेट को मुट्ठी से दबाया जाये तो गढढा बन जाता है जो धीरे–धीरे पुनः अपनी अवस्था में आता है। पशुओं का गोबर कड़ा हो जाता है। तथा गोबर करने की मात्रा और संख्या दोनां ही बहुत कम हो जाती है। पशु के शरीर में जल की भी कमी हो जाती है जिससे पशु दुर्बल होने लगते है। अपच में छुटकारा पाने के लिये पशुओं का शीघ्र उपचार करना आवश्यक है।

+वैज्ञानिक (पशु पालन) ++कार्यक्रम समन्वयक, +++वैज्ञानिक (फसल सुरक्षा) कृषि विज्ञान केन्द्र,पांती,पो0–मन्शापुर 224168 अम्बेडकर नगर,उ0प्र0।

पशुओं में रोमन्थी संकुचन नियमित करने तथा जुगाली प्रारम्भ करने के लिये उन्हें कटु औषधियों का मिश्रण पिलाया या चटाया जाता हैं। इसके लिये चिरायता, सरसों और सोंठ में से प्रत्येक का 30 ग्राम महीन चूर्ण, नौसादर 15 ग्राम काला नमक 15 ग्राम और नमक 50 ग्राम मिलाकर एक खुराक औषधि बनाई जाती है। इस औषधि का इसी मात्रा में 12 खुराक बनाया जाता है। इसे 200 ग्राम शीरा अथवा गुड़ के साथ चटनी बनाकर रोगी पशु को दिन में दो बार चटाया जाता है। पशु को पीने के लिये पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ जल दिया जाता है तथा खाने के लिये स्वच्छ रसदार हरा चारा जैसे बरसीम, जई आदि दिया जाये। इसके साथ ही चिकित्सक की राय के अनुसार अन्य विशेष उपचार की व्यवस्था की जाये। अगर हरा चारा उपलब्ध न हो तो पशु को 2–3 कि0ग्राम चावल का मांड़ अथवा 1 कि0ग्राम चोकर 3कि0 ग्राम जल में पकाकर खिलाना चाहिये।

पशुओं में अफारा का उपचार:–

रोमान्थी पशुओं में अफारा भी एक सामान्य रोग है। पशु को अचानक अधिक मात्रा में

दलहनी हरा चारा खिलाने, अधिक मात्रा में आटा खिलाने, बचे हुये बासी भोजन खिलाने तथा अधिक अन्न ग्रहण के कारण उत्पन्न अपच के पश्चात् भी रोमान्थी में अधिक मात्रा में गैस बनने के कारण अफरा के लक्षण उत्पन्न होते हैं। अफरा से प्रभावित पशु की बायी कोख गैसे के कारण फूलकर तन जाती है और उसे थपथपाने पर ढप–ढप की आवाज निकलती है तथा दबाने के बाद अपच की तरह पेट में गढ्ढा नहीं बनता बल्कि हाथ हटाते ही पुनः अपनी अवस्था में तत्काल आ जाता है। अफरा के उपचार के लिये तत्काल नीम की लगभग 8–10 सेमी0 परिधि की हरी टहनी मुँह में फंसाकर जबड़ों को खुला रखने के लिये बांध देना चाहिये। आधा लीटर अलसी के तेल में 60 मि0ली0 तरपीन का तेल तथा 30 ग्राम हींग मिलाकर रोगी पशु को शीघ्र पिलाने से लाभ होता है। तारपीन का तेल अलग से उपलब्ध न होने तो पशु को 30 ग्राम हींग 20 ग्राम नमक से एक लीटर जल में घोलकर पिलाने से भी लाभ होता है। अगर इस पर भी गैस न निकले और पशु का पेट फूलता जाये तो लगभग 8–10 से0मी0 फल वाले तेज धार के पतले चाकू या घास काटने वाले हंसिया को आग पर जलाकर उसे रोगी पशु के बायीं ओर पेट के सबसे अधिक फूले हुये भाग पर इतना धंसाना चाहिये कि पेट से गैस निकलने लगे। चाकू या हंसिये को उसी प्रकार धंसा हुआ रखना चाहिये और दूसरे हाथ से अथवा दूसरे आदमी की सहायता से पेट को चारों ओर से दबा–दबा कर अधिक गैस पेट के बाहर निकाल देना चाहिये।

पशुओं में अतिसार के लक्षण और उपचार:–

विकृत तथा बासी आहार खिलाने से और संक्रमण से आहार नाल में प्रदाह उत्पन्न होने के कारण अतिसार के लक्षण उत्पन्न होते हैं। अपच और अफरा के बाद भी अतिसार हो सकता है। अतिसार से प्रभावित पशु का गोबर पानी की तरह पतला हो जाता है औरपशु बार–बार मल त्याग करता है। इससे शरीर में जल और लवण की कमी हो जाती है। जिससे रोगी पशु दुर्बल और सुस्त हो जाता हैं। संक्रमण से उत्पन्न अतिसार से प्रभावित पशु के गोबर से बदबू आती हैं। अतिसार से ग्रसित पशु के शरीर से अधिक मात्रा में जल निकलने के कारण पशु शारीरिक जलहीनता से प्रभावित होने के कारण दुर्बल, सुस्त और मलीन त्वचा युक्त हो जाता हैं।

उपचार:

1.अतिसार से पीड़ित पशु को 5–6 लीटर स्वच्छ जल में 50 ग्राम नमक और 200–250 ग्राम गुड़ घोलकर 3–4 घंटे के अंतराल पर बार–बार पिलाना लाभदायक होता हैं।

2.अतिसार रोकने के लिये पशु को 30 ग्राम खड़िया और 30 ग्राम कत्था का चूर्ण बनाकर चार घन्टे के अंतर पर दो बार और उसके बाद आठ घन्टे के अंतर पर आवश्यकतानुसार 2–3 दिनों तक पिलाना चाहिये। इसके साथ 100 ग्राम बेल का गूदा घोलकर पिलाना और भी लाभकारी होता हैं। 3.साथ ही डाक्टर की राय लेकर आवश्यक उपचार करना चाहिये।

4.अतिसार रोकने के लिये आधा किलो चावल का मॉड़, आधा किलो दही, आधा किलो जौ का आटा, 50 ग्राम खड़िया तथा 30 ग्राम नमक का घोल बनाकर सुबह शाम तीन–चार दिन तक पिलाने से लाभ होता हैं।

मुर्गी पालन

देश में 150 मिलियन से अधिक लेयर्स और 650 मिलियन ब्रॉयलर्स हैं। दो प्रकार के मुर्गी चारे होते हैं- लेयर्स का चारा काफी खर्चीला होता है। नवाचारी उच्च मूल्य के मिश्रित चारे के परिणाम स्वरूप अंडों की संख्या बढ़ सकती है परन्तु जोखिम बहुत अधिक होता है क योंकि इनका जीवन चक्र काफी लम्बा होता है।

दो तरह के मुर्गी चारे तैयार किए जा सकते हैं। एक बना-बनाया होता है और यह मैश या पेलेट्स के रूप में उपलब्ध है। दूसरा चारा सान्द्र रूप में दिया जाता है और इसे ऊर्जा स्रोत के साथ मिलाने की आवश्यकता होती है, सान्द्र प्रोटीन के स्रोत होते हैं, जिनका एमिनो एसिड में संतुलन होता है उनमें विटामिन खनिज तत्व और अतिरिक्त चारे के तत्व होते है। इन सान्द्रों को ऊर्जा स्रोतों के साथ मिलाया जाता है जैसाकि मक्का, सोरगम या बाजारा पोल?टरी राशन बनाने के लिए मिलाता जाता है। विटमिन ए बी 2 डी 3 के पोल्टरी फीड का महत्पूर्ण तत्व है चूंकि यह उन्नत पोषक देता है यह पोल्टरी फीड कारखानों हैचरी और फॉर्म में विनिर्मित चारा में मिलाया जाता है।

पोल्टरी फीड अनुपूरक और फीड रसायन में सामान्यत: ऐसे तत्व मिले होते हैं जैसाकि सोय मील तोरी मील, मूंगफली मील, कपास बीज मील, डि ऑयल्ड चावल ब्रान मील, सूर्यमुखी मील, गुअर मील, कोर्न जर्म केक, कोपरा केक और गेहूं ब्रान। अनुपूरक में कुछ ऐसे तत्व भी होते हैं जैसाकि मदुरा माइसीन एम्मोनियम क्लोरटेट्रासाइक्लिन, टीलोसीन फास्फेट, डी1-मेथियोनिन, जिंक बैसीट्रासीन कोलीन क्लोराइड विटामिन ए बी2 डी3 के विटामिन बी काम्प्लेक्स बिटाइन एन हाइड्रस और सर्किल पाउडर।

भेड़ तथा बकरी पालन

देशी भेड़ से लगभग 2 पाउंड ऊन प्रति भेड़ का औसत उत्पादन होता है। भेड़ की संशोधित किस्म से लगभग ६ पाउंड ऊन प्राप्त होती है इसलिए विकास की काफी संभवना है। भेड़ की प्रमुख प्रजातियां है बीकानेरी, दक्कनी, बेल्लारी और मेरिनो। भेड़ की क्रासब्रीडिंग से ऊन की गुणवत्ता और मात्रा अच्छी होती है।

बकरी की जनसंख्या के पांचवे हिस्से का उपयोग दुग्ध उत्पादन के लिए होता है और अन्य से मीट प्राप्त होता है। दुध का औसत उत्पादन काफी कम है लेकिन कुछ प्रजातियां 150 दिनों में एक बार दूध दोहन पर लगभग 400 पाउंड औसतन दूध का उत्पादन करती है। बकरी पालन कृषि योग्य दशाओं में करना चाहिए क्योंकि अत्याधिक चराने से अपरदन होता है।

यदि बकरी को केवल तैयार किया गया भोजन दिया जाता है तो उन्हें लगभग 3-4 कि.ग्रा चारा, 1-2 कि.ग्रा सूख चारा और 200-250 ग्राम तैयार बीज ठोस आहार के रूप में दिया जाना चहिए। यदि बकरियों को आंशिक तौर पर तैयार भोजन दिया जाता है और आंशिक तौर पर खुला चरने के लिए छोड़ा जाता है तो उक्त मात्राओं का ५० प्रतिशत भोजन ही तैयार किया जाना चाहिए। शुरू में बच्चों को दूध पीने देना चाहिए ताकि उन्हें पर्याप्त कोलस्ट्रम मिल सके जो कि प्राकृतिक प्रतिरक्षा के लिए अनिवार्य है। 10-12 दिन के बाद बच्चों के लिए विशेष अनुपूरक राशन दिया जा सकता है लेकिन 2.5-3 महीने की आयु तक दूध पिलाया जाना चाहिए। इसके साथ-साथ बच्चों को मक्का और चरी जैसा सरस हरा चारा दिया जाना चाहिए। वयस्क बकरियों को झाड़ी जैसे अंजन, सुबाबुल, बावुलबीन्स, शेवरी और पंगारा की हरी पत्तियां देनी चाहिए। भेड़ों को पारंपरिक रूप से ऊन और मीट के लिए तथा बकरियों को मुख्यत: मीट के लिए पाला जाता है। उत्तर प्रदेश में देसी बकरियों की प्रजातियों में जमुनापरी और बार्बरी है। जमुनापरी के शरीर का आकार बड़ा होता है और गुणवत्ता और ठोसपन के दोनों प्रयोजन में उत्तम है जबकि बार्बरी छोटे आकार और अच्छी गुणवत्ता वाले मीट के लिए जानी जाती है। भेड़ की प्रजातियों में नली, रामबुलैट और मेरिनो शामिल है। रामबुलैटर और मेरिनो पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती है ताकि स्थानीय प्रजातियों में अच्छी परिधान ऊन के उत्पादन में सुधार लाया जा सके। नली प्रजाति पूर्वोत्तर क्षेत्र में पाली जाती है ताकि गलीचे बनाने के लिए मोटी ऊन के उत्पादन को बढाया जा सके।

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नाम:.....

संस्था का नाम:.....

पूरा पता:.....

ग्राम :.....तहसील :.....

जिला:.....राज्य:.....पिन कोड

दूरभाष कार्य:.....निवास:.....

सदस्यता राशि

एक वर्ष :151 ☐ तीन वर्ष :351 ☐ पांच वर्ष :501 ☐

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :.....

बैंक का नाम:..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक:.....दिनांक:.....

स्थान:..... प्रतिनिधि का नाम:.....हस्ताक्षर सदस्य:.....

दिनांक:.....

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

S.S.AGRO (INDIA) MUMBAI

(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)

- ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
- 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC/ Organic Chemicals

CONTACT NO.-022-6710-3722

EMAIL:aarti@hindchem.com

सनाय (केसिया अंगस्टीफोलिया) – एक दस्तावर औषधीय फसल

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एवम् अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
चौधरी चरण सिंह हरियाणा .षि विश्वविद्यालय, हिसार – 125 004

सनाय को अरब देशों से भारत में लाया गया था। आजकल भारत का सनाय की खेती में विश्व में प्रथम स्थान है। भारत से प्रतिवर्ष 30 करोड़ रूपये से अधिक की सनाय की पत्तियों का निर्यात किया जाता है। यह लेगुमीनोसी कुल का पौधा है। जिसको हिन्दी में सनाय, अंग्रेजी में इण्डियन सेन्ना, राजस्थानी में सोनामुखी कहते हैं। सनाय का पौधा कॉटेरहित व झाड़ीनुमा होता है, जिसकी ऊँचाई 2.0 से 4.0 फुट तथा शाखायें टेढ़ी–मेढ़ी होती हैं। शीत काल में चमकीले पीले रंग के फूल खिलते हैं। इसकी फली हल्के हरे रंग की होती है व पकने पर गहरे भूरे रंग की हो जाती है। बीज भी भूरे रंग के होते है। शुरू में इसकी खेती तमिलनाडू में शुरू हुई थी लेकिन अब यह केरल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र तथा राजस्थान के काफी षगों में उगाया जा रहा है। हरियाणा के दक्षिण–पश्चिम भागों में इसकी खेती आसानी से की जा सकती है।

अधिकतर बंजर भूमि में उगाये जाने के कारण इस औषधीय पौधे के लिये न तो ज्यादा पानी की आवश्यकता होती है और न ही खाद तथा विशेष देखभाल की जरूरत पड़ती है। इस पौधे को गाय, भैंस, हिरण व अन्य पशु आदि नहीं खाते हैं। इस प्रकार भारत के विभिन्न भागों में खाली पड़ी बंजर भूमि में इसकी खेती करके लाभ कमाया जा सकता है।

औषधीय उपयोगः सनाय अधिकतर एक रेचक (स्ंगंजपअम) का कार्य करती हैं। इसकी पत्तियों तथा फलियों में सेनोसाइड पाए जाते हैं। सनाय की पत्तियों का मुख्य उपयोग पेट की बीमारियों से सम्बंधित दवाई बनाने में किया जाता हैं, परन्तु इससे अनेक अन्य किस्म की दवाईयाँ भी बनाई जा रही हैं जैसे पीलिया, अस्थमा, मलेरिया, बुखार, अपच आदि। चर्म रोगों में भी इसकी पत्तियों का उपयोग होता है। पत्तियाँ दस्तावर होती हैं।

जलवायुः इसकी खेती के लिये शुष्क जलवायु तथा कम वर्षा की आवश्यकता होती है। यह पौधा न्यूनतम 5.0 डिग्री सैंटीग्रेड तथा अधिकतम 50.0 डिग्री सैंटीग्रेड तक की गर्मी सहन करने की क्षमता रखता है। इसकी खेती के लिये 50 सैं. मी. वर्षा काफी रहती है। इसकी जड़ें जमीन में काफी नीचे तक चली जाती हैं

भूमिः इसकी खेती के लिये रेतीली से लेकर दोमट मिट्टी अच्छी रहती है। अतः ऐसी जमीन जहाँ किसी प्रकार की खेती न होती हो तथा अन्य जगह जहाँ कोई फसल ले पाना संभव न हो, इसकी खेती के लिये उपयुक्त है। इसके लिये उचित जल निकास बहुत ही जरूरी है।

खेत की तैयारीः बिजाई से पहले खेत को 2–3 बार जुताई करके खरपतवार से मुक्त कर लेना चाहिये तथा सुहागा लगाकर खेत को समतल बना लें।

बिजाई का समयः इसकी बिजाई जुलाई के अन्तिम सप्ताह से लेकर अगस्त के अन्तिम सप्ताह तक करनी चाहिये। सिंचित क्षेत्रों में इसकी बिजाई मार्च में भी की जा सकती है। मौनसून की अन्तिम बरसात के बाद इसका बोना ज्यादा लाभदायक होता है।

बीज की मात्राः एक एकड़ के लिये लगभग 4 किलो बीज की आवश्यकता होती है।

किस्मः ए.एल.एफ.टी. 1, सोना एवं त्रिनवेली विकसित किस्में हैं।

बिजाई का तरीकाः बिजाई से पहले बीज के जमाव का परीक्षण अवश्य कर लें। मौनसून की अन्तिम बरसात के तुरन्त बाद हल या ट्रेक्टर से लाईनों में बिजाई करें तथा लाईन से लाईन और पौधे से पौधे का फासला 30 सैं. मी. रखें। प्रायः 10–12 दिनों में अंकुरण हो जाता है। बीज को 1.5 से 2.0 सें. मी. से ज्यादा गहरा नहीं डालना चाहिये तथा बिजाई के समय खेत में अच्छी नमी होनी चाहिये। बिजाई से पहले बीज को 24 घंटे पानी में भीगोकर रखने व 2 घंटे छाँव में सूखा लेने पर जमाव जल्दी और अच्छा होता है।

खादः खाद की कोई खास आवश्यकता नहीं पड़ती, परन्तु अच्छी फसल लेने के लिये 4–5 टन गली–सड़ी गोबर की खाद डालनी चाहिये।

सिंचाईः इस फसल में पूरे वर्ष 2–3 सिंचाई की जरूरत पड़ती हैं।

निराई–गुड़ाईः बिजाई के 25–30 दिन बाद निराई–गुड़ाई

अवश्य करें, जिससे खरपतार नष्ट हो जायें। वर्ष में 2–3 बार निराई–गुड़ाई की आवश्यकता पड़ती है।

बीमारी तथा रोकथामः सनाय की फसल में बीमारी से लड़ने की पूरी क्षमता होती है। इस फसल को दीमक व टिड्डी भी कम हानि पहुँचाती है। बरसात के दिनों में कभी–कभी इसकी पत्तियों पर काले धब्बे दिखते हैं। लेकिन किसानों को घबराना नहीं चाहिये। धूप निकलने पर अपने आप ठीक हो जाते हैं। कभी–कभी फूल खाने वाले कीड़ों का प्रकोप होता है। इसके लिए नीम के पत्तों/निंबोली का घोल या गोमूत्र को पानी में मिलाकर छिड़कने से लाभ होता है।

फसल की कटाई तथा संग्रहः फसल को कोई विशेष देखभाल की आवश्यकता नहीं पड़ती। बिजाई के लगभग 90–100 दिन बाद पत्तियाँ काटने योग्य हो जाती हैं। पौधों को 3ध्–4ध् जमीन से ऊपर तेज धार वाली हंसिया से काटना चाहिये। काटते समय ध्यान रहे कि पौधा उखड़ना नहीं चाहिये। काटते समय खेत की मिट्टी ज्यादा गिली नहीं होनी चाहिये। बाद की कटाईयाँ 60–70 दिन बाद करते रहना चाहिये। पौधों को काटकर छोटी–छोटी ढेरियां बना लेनी चाहिए। कटाई में देरी नहीं करनी चाहिए अन्यथा पुराने पत्ते झड़ने लगते है जिससे उपज कम होती है तथा पत्तों की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। पूरे वर्ष में चार कटाई तक ले सकते हैं। सर्दियों में पाला पड़ने का डर रहता है। अतः पहली कटाई पाला पड़ने से पहले करनी चाहिए। पौधों को छाया में सूखाने के 4–5 दिन बाद बड़ी–बड़ी ढेरियाँ बना लेनी चाहिये। इसके बाद तिरपाल बिछाकर, पत्ते झाड़ लेने चाहिये तथा पत्ते और डंठल अलग कर लेते हैं। पत्तों को अच्छी तरह सूखाकर बोरो में भरकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिये जहाँ पर नमी न पहुँचे।

बीज उत्पादनः किसानों को स्वयं अपना बीज तैयार करना चाहिये। खेत में अच्छे तथा स्वस्थ पौधों को छोड़ देना चाहिये तथा उन पर फलियाँ लगने दें। जब फलियाँ पक जाती हैं तो भूरे रंग की हो जाती है, तभी उनको तोड़कर 3–4 दिन तक धूप में सुखा लेना चाहिये। सुखने पर फलियों को हाथ द्वारा रगड़कर बीज को अलग करके बोने के लिये सुरक्षित रख लेना चाहिए।

उपजःसूखी पत्तियों का उत्पादन चार कटाई प्रति वर्ष करने पर 4–6 क्विंटल हो जाता है तथा 1.0 से 1.50 क्विंटल बीज भी मिल जाता है।

बाजार मूल्यः सूखी पत्तियों का बाजार भाव 20–25/– रूपये तथा बीज का भाव 50–60/– रूपये प्रति किलोग्राम है। खेती पर 4000–5000 रूपये प्रति एकड़ खर्चा हो जाता है। अतः सनाय की खेती से लगभग 10,000/– रू. प्रति एकड़ का शुद्ध लाभ होता है।

खरबूजा उत्पादन की उन्नत तकनीक

डॉ. राकेश कुमार शर्मा
विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी)
.....
डॉ. स्वप्निल दुबे
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
.षि विज्ञान केन्द्र, रायसेन

खरबूजा कद्दूवर्गीय सब्जियों में प्रमुख फसल है, जोकि ताजा खाने के काम आता है। इसके फल बिटामिन– ए, बी व सी तथा कैल्शियम, फॉस्फोरस व लौह तत्व से भरपूर होते हैं। इसके बीज खाने योग्य स्वादिष्ट व पोषक तत्वों से युक्त होते हैं तथा उनमे तेल की प्रचुर मात्रा होती है। इसके बीज शर्वत और ठण्डाई बनाने के भी काम आते हैं।

जलवायू–खरबूजा के लिए गर्म जलवायू उपयुक्त रहती है। पाला सहन नहीं कर सकती है। शुष्क एवं गर्म जलवायू न केवल फसल की अच्छी बढ़वार के लिए आवश्यक है बल्कि फलों के अधिक मिठास एवं अच्छी सुगन्ध के लिए भी जरूरी है।

भूमि–अच्छी जल निकास वाली, बलुई दोमट या दोमट मिट्टी इसकी खेती के लिए उपयुक्त रहती है। भूमि का भ्6.0–7.0 उपयुक्त रहता है।

उन्नत किस्में–

1.अर्का जीतः–इसके फल छोटे गोल, वजन 300–500 ग्राम, रंग नारंगी–भूरा होता है। गूदा सफेद, सुगन्ध वाला, मीठा (15–17 प्रतिशत टी.एस.एस.) तथा विटामिन– सी अधिक मात्रा में होता है। औसत उत्पादन150 क्विंटल/हैक्टेयर होता है।

2.अर्का राजहंसः–अगेती किस्म, फल गोल से अण्डाकार, वजन 1 किग्रा तथा रंग सफेद होता है। गूदा सफेद, मोटा तथा मीठा होता है जिसकी घुलनशील शर्करा 14 प्रतिशत रहती है। औसत उपज 280 क्विंटल/हैक्टेयर होती है।

3.पूसा रसराजः–फल लम्बे, चिकने, धारी रहित होते हैं। गूदा हरे रंग का मिठास वाला (11–12 प्रतिशत टी.एस.एस.) होता है। वजन 1 किग्रा तथा पहली तुड़ाई 75–80 दिन में शुरू हो जाती है। औसत उपज 200–250 क्विंटल/हैक्टेयर होती है।

4.पूसा शर्वतीः–गूदा गहरे नारंगी रंग का तथा मीठा (10–12 प्रतिशत टी.एस.एस.) होता है। औसत पैदावार 200–250 क्विंटल/हैक्टेयर होती है।

5.पूसा मधुरसः–मध्यम मौसम की फसल है, फल चपटे गोलाकार और चमकीले पीले तथा गहरी हरी धारी वाले होते हैं। फल का वजन 1 किग्रा, तथा गूदा गहरे नारंगी रंग का रसदार होता है। बहुत मीठा तथा घुलनशील शर्करा मात्रा 14 प्रतिशत होती है। औसत पैदावार 180–200 क्विंटल/हैक्टेयर होती है।

6.दुर्गापुरा मधुः–फल अण्डाकार, औसत वजन 500–600ग्राम होता है। छिलके का रंग हल्का हरा तथा हरी पट्टियों वाला होता है। कुल घुलनशील शर्करा की मात्रा 13–14 प्रतिशत तक होती है।

इसके अलावा कई निजि बीज उत्पादक कम्पनियों के भी क्षेत्र के अनुसार किस्में विकसित कर रखी हैं किसान भाई इनका प्रयोग भी कर सकते हैं।

बुवाई का समयः–फरबरी–मार्च, लो–टनल पॉली हाऊस में दिसम्बर–जनवरी में की जा सकती है।

बीज की मात्राः–बीज की मात्रा1.5–2.0 किग्रा/हैक्टेयर की आवश्यकता रहती है।

खाद एवं उर्वरक की मात्राः–

	खाद एवं उर्वरक	मात्रा प्रति हैक्टेयर
1.	गोबर की खाद	200–250 क्विंटल
2.	नत्रजन	80 किग्रा
3.	फास्फोरस	40 किग्रा
4.	पोटाश	40 किग्रा

देशी खाद, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की 1/3 मात्रा बुवाई के समय भूमि में मिलाकर देवें तथा शेष नत्रजन की मात्रा को दो बराबर भागों में बांटकर टोप ड्रेसिंग ;खड़ी फसल मेंद्ध के रूप में प्रथम बार बुवाई के 25 से 30 दिन बाद व दूसरी बार फूल आने के समय देना चाहिये।

खेत की तैयारीः–खेत में अच्छी गहरी जुताई करके मिट्टी को भुरभुरी बना लें तथा गोबर की खाद मिलायें।

बुवाई का तरीकाः–खेत में लगभग 45 सें.मी. चौड़ी तथा 30–40 सें.मी. गहरी नालियां बना लें। एक नाली से दूसरी नाली की दूरी फसल की बेल की बढ़वार के अनुसार 1.5 मी. से 3 मी. तक रखें। बुवाई से पहले नालियों में पानी लगा दें। जब नाली में नमी की मात्रा बीज बुवाई के लिए उपयुक्त हो जाए तो बुवाई के स्थान पर मिट्टी भुरभुरी करके 0.50 से 1.0 मी. की दूरी पर बीज बोएं।

पॉली हाउस विधि से अगेती खेती :खरबूजा की अगेती फसल तैयार करने के लिए पॉली हाउस में जनवरी माह में झोंपड़ी के आकार का पॉली हाउस बनाकर पौध तैयार कर लेते हैं। पौधे तैयार करने के लिए 15□10 सें.मी आकार की पॉलीथीन की थैलियों में 1:1:1 मिट्टी, बालू व गोबर की खाद भरकर जल निकास की व्यवस्था हेतु सूजे की सहायता से छेद कर लेते हैं। बाद में इन थैलियों में लगभग 1 सें.मी. की गहराई पर बीज की बुवाई करके बालू की पतली परत बिछा लेते हैं तथा हजारे की सहायता से पानी लगाते हैं। लगभग 4 सप्ताह में पौधे खेत में लगाने के योग्य हो जाते हैं। जब फरवरी माह में पाला पड़ने का डर समाप्त हो जाये तो पॉलीथीन की थैली को ब्लेड से काटकर हटाने के बाद पौधे की मिट्टी के साथ खेत में बनी नालियों की मेंड पर रोपाई करके पानी लगाते हैं। इस प्रकार लगभग एक से डेढ़ माह बाद अगेती फसल तैयार हो जाती है जिससे किसान अगेती फसल तैयार करके ज्यादा लाभ कमा सकता है।

सिंचाईः–पहली सिंचाई बुवाई के तुरंत बाद करें इसके बाद जलवायू एवं मिट्टी के आधार पर आवश्यकतानुसार प्रति सप्ताह नालियों में सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रणः–शुरू के 45 दिन तक खेत में निंदाई–गुड़ाई करते रहें।

बेल की कटाई–छंटाई–बेल की बहुत ज्यादा बढ़वार को छंटाई करके वानस्पतिक वृद्धि कम की जा सकती है, जिससे मादा पुष्पों की संख्या बढ़ जाती है।

फलों की तुड़ाईः– अन्य सब्जियों की तरह कच्चे फल तोड़ने पर अपने वास्तविक गुणों से रहित फल मिलते हैं, अतः इन्हें पकने के बाद ही तोड़ना चाहिए। जिससे स्वादिष्ट एवं गुणों से भरपूर फल मिल सकें।

परिपक्वता के लक्षण–

- परिपक्वता अवस्था में तने के डण्ठल से फल स्वतः ही अलग होने लगते हैं।
- पकने पर फलों के गूदे का रंग हरे से पीला या नारंगी रंग में परिवर्तित हो जाता है।
- डण्ठल के नीचे वाले स्थान पर फल मोमिया हो जाता है।
- छिलके को अंगूठे से दवाकर उसके नरम होने का आसानी से पता लगा सकते हैं।

पौध संरक्षण

कीट नियंत्रणः–

1) लाल भृंग (रेड पंपकिन बीटल)–यह लाल रंग का छोटा कीट होता है तथा अंकुरित तथा नई पत्तियों को खाकर छलनी कर देता है। इसके प्रकोप से कई बार पूरी फसल नष्ट हो जाती है।

प्रबंधन–

1. फसल खत्म होने पर बेलों को खेत से हटाकर नष्ट कर दें।
2. फसल की अगेती बुवाई से कीट के प्रभाव को कम किया जा सकता है।
3. संतरी रंग के भृंग को सुबह के समय इकट्ठा करके नष्ट

कर दें।

4. कार्बेरिल 50 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम/लीटर या एन्डोसल्फान 35 ई.सी. 2 मि. ली/लीटर या एमामेक्टिन बैंजोएट 5 एस. जी. 1 ग्राम/2 लीटर या इन्डोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 1 मि.ली. /2 लीटर का छिड़काव करें।
5. भूमिगत शिशुओं के लिए क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. 2.5 लीटर/हेक्टेयर हल्की सिंचाई के साथ इस्तेमाल करें।

2) फल मक्खीः–इस कीट की मक्खी फलों में अंडे देती है तथा शिशु अंडे से निकलने के तुरंत बाद फल के गूदे को भीतर ही भीतर खाकर सुरंगें बना देते हैं।

प्रबंधन–

1. ग्रसित फलों को भी एकत्रित करके नष्ट कर दें।
2. मैलाथियॉन 5. ई सी या डाईमिथोएट 30 ई सी एक मिलीलीटर का प्रति लीटर पानी की दर से छिड़कव करें। आवश्यकतानुसार 10 से 15 दिन बाद छिड़काव को दोहरावें।
3. सफेद मक्खी (व्हाइट लाई)–इस कीट के शिशुओं व वयस्कों के रस चूसने से पत्ते पीले पड़ जाते हैं। इनके मधुबिन्दु पर काली फंफूद आने से पौधों की भोजन बनाने की क्षमता कम हो जाती है। इस कीट की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 1 मि.ली./3 लीटर या डाइमेथोएट 30 ईसी. 2 मि. ली./लीटर का छिड़काव करें।
4. चेंपा (एफिड) चेपा लगभग सभी कद्दू वर्गीय फसलों पर आक्रमण करते हैं। ये पौधों के कोमल भागों से रस चूसकर फसल को हानि पहुंचाते हैं।

नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 1 मि.ली./3 लीटर या डाइमेथोएट 30 ई.सी. 2 मि.ली./लीटर या क्वनलफॉस 25 ई.सी. 2 मि.ली/लीटर का छिड़काव करें।

रोग नियंत्रणः–

1) पाउडरी मिल्डयू (तुलासिता)–पत्तियों की ऊपरी सतह पर हल्के पीले धब्बे दिखाई देते हैं तथा नीचे की सतह पर कवक की वृद्धि दिखाई देती है।

नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक 2 ग्राम या डायनोकेप 1.0 मिली. या मेन्कोजेब 2 ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

2) एन्थ्रेक्नोजः–इस बीमारी की वजह से फलों एवं पत्तियों पर गहरे भूरे से काले रंग के धब्बे बन जाते हैं रोग ग्रस्त भाग सूखने लगता है।

रोकथाम के लिए मेन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

3) विषाणु रोग

विषाणु रोग एफिड्ससे संचारित होता है तथा रोग का आक्रमण होने पर पत्ती की लम्बाई चौड़ाई कम हो जाती है। ग्रसित पौधो के फल भद्दे रंग के व बेडोल आकार के हो जाते है।

नियंत्रण हेतु रोग के लक्षण दिखाई देते ही पौधे को उखाड़ कर जला देवें।

विषाणु ग्रसित पौधे से बीज प्राप्त न करें। रोग रोधी किस्म का चुनाव करें।

विषाणु रोग की रोकथाम के लिये फास्फोमिडान 85 एस एल 0.3 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से 10 से 15 दिन के अन्तर पर छिड़काव करें।

नीम के गुण

नीम एक बहुत ही अच्छी वनस्पति है जो की भारतीय पर्यावरण के अनुकूल है और भारत में बहुतायत में पाया जाता है। इसका स्वाद तो कड़वा होता है लेकिन इसके फायदे तो अनेक और बहुत प्रभावशाली है।

१- नीम की छाल का लेप सभी प्रकार के चर्म रोगों और घावों के निवारण में सहायक है।

२- नीम की दातुन करने से दांत और मसूड़े स्वस्थ रहते हैं।

३- नीम की पत्तियां चबाने से रक्त शोधन होता है और त्वचा विकार रहित और कांतिवान होती है। हां पत्तियां अवश्य कड़वी होती हैं, लेकिन कुछ पाने के लिये कुछ तो खोना पड़ता है मसलन स्वाद।

४- नीम की पत्तियों को पानी में उबाल उस पानी से नहाने

से चर्म विकार दूर होते हैं, और ये खासतौर से चेचक के उपचार में सहायक है और उसके विषाणु को फैलने न देने में सहायक है।

५- नींबोली (नीम का छोटा सा फल) और उसकी पत्तियों से निकाले गये तेल से मालिश की जाये तो शरीर के लिये अच्छा रहता है।

६- नीम के द्वारा बनाया गया लेप बालो में लगाने से बाल स्वस्थ रहते हैं और कम झड़ते हैं।

७- नीम की पत्तियों के रस को आंखों में डालने से आंख आने की बीमारी (नेत्रशोथ या कंजेक्टिवाइटिस

८- नीम की पत्तियों के रस और शहद को २:१ के अनुपात में पीने से पीलिया में फायदा होता है, और इसको कान में डालने से कान के विकारों में भी फायदा होता है।

९- नीम के तेल की ५-१० बूंदों को सोते समय दूध में डालकर पीने से ज़्यादा पसीना आने और जलन होने सम्बन्धी विकारों में बहुत फायदा होता है।

१०- नीम के बीजों के चूर्ण को खाली पेट गुनगुने पानी के साथ लेने से बवासीर में काफ़ी फ़ायदा होता है।

विज्ञापन हेतु संपर्क करें

ममता (मुम्बई) 08898600347
गौतम राज सारस्वत (भायंदर)09987030599
महेन्द्र दधीच (जयपुर)09462392863
जयदीप माथुर (गुड़गाँव) 09928960900
दिलबाग सिंह बडेसरा (गुड़गाँव)09810026778
तारा मोहन (दिल्ली) 09582444313

सूचना

पाक्षिक समाचार पत्र सृष्टि एग्रो में प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों व लेख़ो में समाविष्ट सभी बातों की जाँच-परखकर पाना सँभव नही है विज्ञापनों में अपने उत्पादनों अथवा अपनी सेवाओं के बारे में विज्ञापनदाता जो दावे करते है ,सृष्टि एग्रो समाचारपात्र उसकी कोई गारंटी नही लेता. विज्ञापनों में किए गए दावो की पूर्ति यदि विज्ञापनदाता द्वरा नही होती है तो उसके लिए पाक्षिक सृष्टि एग्रो समाचारपत्र समूह के मुद्रा , संपादक ,प्रकाशक व मालिक किसी भी रूप में जवाबदेह नही होंगे,कृपया इसे ध्यान में रखे. अत: हम पाठकों से अनुरोध करते है कि विज्ञापन में उल्लेखित बातों के संदर्भ में कोई भी करार करने के पूर्व उसके बारे में आवश्यक छानबीन कर ले.

पति के साथ कदम से कदम मिलाया

इस स्पर्धा के युग मे महिलाओं को आगे आना ही पडेगा। केवल गृहणी बने रहने से महिलाओं का विकास सीमित हो जाता है। एक अच्छी गृहणी होना जितना आवश्यक है, उससे कई ज्यादा आवश्यक है, कुटूंब के आर्थिक विकास मे योगदान करना। यह सिध्द किया है सौ. शोभा देशमुख ने। घर का खर्च ॲटोरिक्षा से ही चलता था। सौ. शोभा

सौ. शोभा सिलाई का काम करते हुए।

चाहती थी के वंह भी घर खर्च मे हाथ बटांए, किंतु कम शिक्षण तथा घर की महिलाओं को बाहर जाने पर पाबंदी के कारण कुछ नही कर पाती।

सौ. शोभा देशमुख ने .षि विज्ञान केन्द्र मे फॅशन डिझायनिंग का कोर्स को मन लागाकर पुर्ण किया। प्रशिक्षण पश्चात शोभा ने घर पर ही लोंगो के कपडे कम किमत पर सिलना शुरू किया। महिने मे 300 से 400 रुपये की आमदनी होने लगी।

संस्थान के सहयोग से स्कुल की युनिफॉम तैयार करने का कार्य भी सौ. शोभा को दिया गया। इस कार्य को सीमित अवधी मे पुरा करने हेतु अन्य दो महिलाओं को भी उस कार्य मे जोड दिया गया। फल स्वरुप यंह कार्य समय सीमा मे पूरा हो गया और स्कुल प्रशासन ने कार्य की प्रशंसा की। सौ. शोभा देशमुख को काम करने की चाह थी, संस्थान ने उन्हे राह दिखाई। जिसके कारण उनके जीवन मान मे निश्चित स्वरुप से बदलाव आया है। तथा समाज मे उनके कार्य कि प्रशंसा हो रही है। घर मे भी उन्हे काफी सम्मान प्राप्त हो रहा है।

संस्थान के प्रति शोभा देशमुख .तज्ञता व्यक्त करती है।

पीपल-पर्यावरण की सुरक्षा

हिन्दू धार्मिक ग्रंथों के अनुसार मान्यता है कि पीपल आदिकाल से स्वर्ग लोग के वट वृक्ष के रूप में इस धरती पर ब्रहमा जी के तप से उतरा है। पीपल के हर पत्ते में ब्रहमा जी का वास माना जाता है। आदि शंकराचार्य ने पीपल की पूजा को जहां पर्यावरण की सुरक्षा से जोड़ा है, वहीं इसके असाढ़ मास में पूजन से दैहिक, दैविक और भौतिक ताप दूर होने की बात भी कही है।

पीपल न केवल एक पूजनीय वृक्ष है, बल्कि इसके वृक्ष खाल, तना, पत्ते तथा बीज आयुर्वेद की अनुपम देन भी है। पीपल को आर्युवेद के प्रसिद्ध ग्रंथ निघन्टु शास्त्र ने ऐसी अजर-अमर बूटी का नाम दिया है, जिसके सेवन से वात रोग, कफ रोग और पित्त रोग नष्ट होते हैं।

भगवद्गीता में भी इसकी महानता का स्पष्ट उल्लेख है। गीता में इसे वृक्षों में श्रेष्ठ 'अश्वत्थ' को अथर्ववेद में लक्ष्मी, संतान व आयुदाता के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। कहा जाता है कि इसके परिक्रमा मात्र से रोग नाशक शक्तिदाता पीपल मनोवांछित फल प्रदान करता है। गंधर्वों, अप्सराओं, यक्षिणी, भूत, प्रेतात्माओं का निवास स्थल, जातक कथाओं, पंचतंत्र की विविध कथाओं का घटनास्थल तपस्वियों का आहार स्थल होने के कारण पीपल का माहात्म्य दुगुना हो जाता है। हिन्दू संस्कृति में पीपल देव वृक्ष माना जाता है। उनकी अगाध आस्था में सराबोर पीपल को देव निवास मानते हुए इसको काटना या मूल सहित उखाड़ना वर्जित है, अन्यथा देवों की अप्रसन्नता का परिणाम अहित होना है।

भारत में उपलब्ध विविध वृक्षों में जितना अधिक धार्मिक एवं औषधीय महत्व पीपल का है, अन्य किसी वृक्ष का नहीं है। यही नहीं पीपल निरंतर दूषित गैसों का विषपान करता रहता है। ठीक वैसे ही जैसे शिव ने विषपान किया था।

यह दूषित गैस नष्ट करने के लिए प्राणवायु अर्थात् आक्सिजन निरंतर छोड़ता रहता है। क्योंकि वृक्ष घना होने के बावजूद इसके पत्ते कभी भी सूर्य प्रकाश में बाधक नहीं बनते। यह छाया देता है, किन्तु अंधकार से इसका कोई सरोकार नहीं है। संभवत: यही कारण है कि सभी अमृत तत्व पाए जाते हैं।

पीपल लैटिन भाषा में पिकस रिलिजियोसा के नाम से जाना जाता है। प्राय: प्राचीन दुर्ग भवन व मंदिर में पाए जाने वाले वृक्ष पीपल के नीचे शिवलिंग या शिव मंदिर पाया जाना भी स्वाभाविक बात है। भारतीय आस्था के अनुसार पीपल के भीतर तीनों देवता अर्थात ब्रहमा, विष्णु और महेश का निवास माना जाता है। अत: इसके नीचे शिवालय होने पर इसे पीपल महादेव के नाम से भी सम्मानित किया जाता है।

सदैव गतिशील प्रकृति के कारण इसे चल वृक्ष भी कहते हैं। पीपल की आयु संभवत: ९० से १०० सालों के आसपास आंकी गई है। इसके पत्ते चिकने, चौड़े व लहरदार किनारे वाले होते हैं। संभवत: इतिज मासिक या गर्भाशय संबंधी स्त्री जनित रोगों में पीपल का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। पीपल की लंबी आयु के कारण ही बहुधा इसमें दाढ़ी निकल आती हैं। इसकी दाढ़ी का आयुर्वेद में

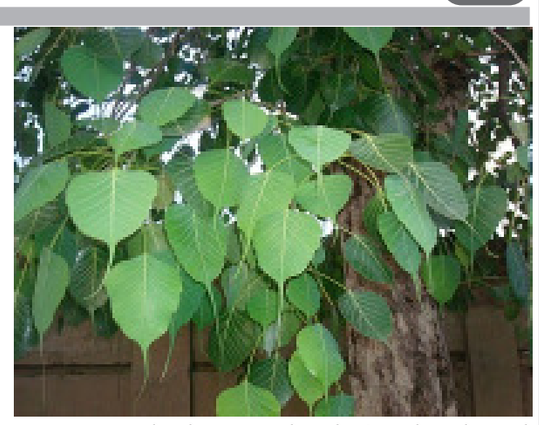

शिशु माताजन्य रोग में अद्भुत प्रयोग होता है। पीपल की जड़, शाखाएं, पत्ते, फल, छाल व पत्ते तोड़ने पर ड़ठल से उत्पन्न स्राव या तने व शाखा से रिसते गोंद की बहुमूल्य उपयोगिता सिद्ध हुई है। अथर्ववेद में पीपल को अश्वत्थ के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि चाणक्य के समय में सर्प विष के खतरे को निष्प्रभावित करने के उद्देश्य से जगह-जगह पर पीपल के पत्ते रखे जाते थे। पानी को शुद्ध करने के लिए जल पात्रों में अथवा जलाशयों में ताजे पीपल के पत्ते डालने की प्रथा अति प्राचीन है। कुएं के समीप पीपल का उगना आज भी शुभ माना जाता है। हड़प्पा कालीन सिक्कों पर भी पीपल वृक्ष की आकृति देखने को मिलती है। तांत्रिक यंत्र के रूप में भी इसका प्रयोग होता है। सहस्त्रवार चक्र जाग्रत करने हेतु भी पीपल का महत्व अक्षुण्ण है। पीपल भारतीय संस्कृति में अक्षय ऊर्जा के स्त्रोत के रूप में विद्यमान है। त पीपल को देव निवास मानते हुए इसे काटना या मूल सहित उखाड़ना वर्जित है।

शुष्क क्षेत्रो की फसल ईसबगोल

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एवं अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
सी. सी. एस. हरियाणा . कृषि विश्वविद्यालय, हिसार – 125 004

ईसबगोल प्लान्टेजिनेसी कुल का पौधा है। सस्कृत में इसे अश्वकर्ण कहा जाता है। भारत में इसका उत्पादन प्रमुखतया गुजरात, पंजाब, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में होता हैं। भारत इसका सर्वाधिक उत्पादक व निर्यातक देश है। इसका पौधा छोटा 30–40 सै. मी. उचाँ होता है। इसकी पत्तियां प्रारम्भ में गेहूं की पत्तियों से मिलती जुलती है। इसकी बाल 3–5 सें. मी. लम्बी होती है। दाने एक पतली सफेद झिल्ली से ढकें होते हैं इसमें एक लसलसा पदार्थ रहता है। जिसमें इसके वजन से कई गुना अधिक पानी अवशोषित करने की क्षमता होती है। हरियाणा प्रदेश के कम उपजाऊ व कम पानी वाले इलाको में सफलता पूर्वक करने के लिए निम्नलिखित बातों की सिफारिश की जाती है।

औषधीय गुण एवं उपयोग: ईसबगोल की सफेद भूसी पौष्टिक, शीतल और मूत्रल होती है। इसका प्रयोग कब्ज व अतिसार दोनों में होता है। इसको पेट की सफाई, अल्सर, बवासीर (सूखी व खूनी), मूत्रसंस्थान, आँव–पेचिश जैसी शारीरिक बिमारियों में औषधि के रुप में प्रयुक्त होता है। इसके अतिरिक्त ईसबगोल का उपयोग प्रिंटिंग, खाद्य प्रसंस्करण, आइसक्रीम और रंग रोगन में भी किया जाता है। इसका प्रयोग पोल्ट्री फीड में भी होता है।

जलवायु: इसके लिए ठण्डी एवं खुश्क जलवायु आवश्यक होती है। पकाव के समय वर्षा होने पर इसके बीज झड़ जाते है और छिलका फूल जाता है। जिससे बीज की गुणवता व पैदावार दोनो पर प्रभाव पड़ता है।

भूमि: ईसबगोल की खेती उचित निकास वाली हल्की दोमट बलुई मिट्टी, हल्की काली व चिकनी मिट्टी में हो सकती है। यह फसल थोड़ी सी क्षारीय लवणता को भी सहन कर सकती है। यह 7.0 से 8.5 तक पी एच मान वाली मिट्टी में उगाई जा सकती है।

भूमि की तैयारी: मिट्टी को दो या तीन बार हैरो या देसी हल से जुताई करके भुरभुरा तैयार करें और इसे समतल बनाएं ताकि नीचे स्थानों पर पानी खड़ा न हो सके।

किस्म: हरियाणा ईसबगोल नं. 5, गुजरात इसबगोल नं. 1, गुजरात इसबगोल नं. 2, जवाहर इसबगोल नं. 4.

बिजाई का समय: असिंचित अवस्था में 15 अक्तूबर के आसपास व सिंचित दशा में नवम्बर के आखिरी सप्ताह तक बिजाई करें।

बिजाई का तरीका व बीज की मात्रा: अगर भूमि में ऊपर अच्छी नमी हो तो 1.5 किलो ग्राम बीज प्रति एकड़ की दर से छिट्टा लगाकर उस पर सुहागा लगा दिया जाता है। केरा विधि द्वारा 2.5–3.0 किलो ग्राम बीज प्रति एकड़ 22.5 सैंटीमीटर (9 इंच) के फासले पर लाइनों में भी बीजा जा सकता है। यह सावधानी रखे की बीज की बुवाई 1–2 सैं.मी. से अधिक गहरी न हो अन्यथा अकुंरण नही होगा। अच्छे जमाव के लिए बुवाई के बाद खेत की हल्की सिंचाई अवश्य करें।

उर्वरक / खाद: गोबर की खाद 4–5 टन प्रति एकड़ या अन्य कार्बोनिक एवं जीवाणु खाद खेत तैयारी से पहले डाले।

सिंचाई: अच्छे जमाव के बाद 30 दिन पर सिचाई करे। उसके 60–70 दिन बाद या बाल निकलने की अवस्था में सिंचाई आवश्यक है।

निराई व गुड़ाई: इस फसल की वृद्धि मंद गति से होती है तथा ऊँचाई भी अधिक नही होती है इसलिए सभी प्रकार के खरपतवार स्पर्धा में आगे रहते हैं। अत: 20–30 दिन बाद एक निराई–गुड़ाई अवश्य करें। यदि आवश्यकता हो तो दूसरी निंदाई भी करें।

पौध संरक्षण: इस फसल में कभी–कभी डाऊनी मिल्ड्यू (जोगिया रोग) का आक्रमण होता है। इसकी रोकथाम के लिए बीज को थायरम या सेरेसान (3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर) से उपचारित करें। बीमारी आने पर डाईथेन एम–45 या रेडोमिल का 0.2 प्रतिशत का घोल बनाकर 2–3 बार 15 दिन के अन्तर पर छिड़काव करें। माहो का प्रकोप होने पर इड़ोसल्फान 2 मि. ली. / लि. घोल का छिड़काव करें।

कटाई: फसल की पत्तियां जब पीली पड़ जावे एवं बाल का रंग मटमैला सा हो जावे तथा बाल को हाथ में लेकर दबाने से दानें बाहर निकल आवें तब समझना चाहिए की फसल काटने योग्य हो गई है। यह अवस्था लगभग 130–140 दिन बाद आ जाती है। कटाई सुबह 10–11 बजे तक करनी चाहिए।

प्रसंस्करण: बीज के छिलके (भूसी) को मशीन द्वारा अलग किया जाता है। इसे ओखली में कूटकर व फटककर भी निकाला जा सकता है। 25–30 प्रतिशत कुल दानों के वजन का छिलका निकलता है।

उपज: ईसबगोल के बीज की उपज 4–6 क्विं. / एकड़ होती है।

आय व्यय: ईसबगोल की खेती पर लगभग 2000–2500 रु प्रति एकड़ खर्च हो जाता है। इसका बाजार भाव 20–25 रु प्रति कि. ग्रा. है। अत: कुल आमदनी 10,000–15,000 रु एवं शुद्ध लाभ 8,000–12,500 रु प्रति एकड हो सकता हैं।

(पाक्षिक राशि फल)

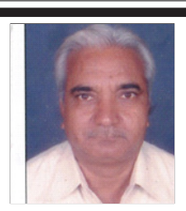

15–01–2014 से 31–01–2014

ज्योतिषाचार्य -पं.जयदत्त व्यास -जयपुर

AJS	अनिश्चितता,कार्य अवरोध ,विलम्ब से सफलता का योग,
BKT	स्वजनों से मिलकर चलने से लाभ,शारीरिक,मानसिक दुर्बलता रहे,
CLU	अनिश्चितता का वातावरण रहेगा,अन्त मे लाभपूर्ण योग,
DMU	धन लाभ कम,मेहनत अधिक, किसी के सहयोग से कार्य करने से लाभ,
NEW	आकस्मिक रूप से लाभ हानि ,व्यापार मे सावधानी रखें
FOX	पारिवारिक रूप से लाभ,नये व्यक्ति से संपर्क जिससे आगे लाभ की संभावना,
GPY	मानसिक चिंतन अधिक ,लाभ-हानि साथ साथ
HQZ	समय का उपयोग ठीक प्रकार से करने से लाभ,विरोधी प्रबल,
IR	अधिव्यस्तता ,तथा अधिकारी लोगो से परेशानियाँ ,उद्वेगपूर्ण समय,

मंथन

किसान महिला

खेत खलिहान का नाम आते ही किसान के रूप में मन में एक पुरुष की छवि उभरती है। महिलाओं द्वारा खेतों में बड़ी संख्या में काम करने के बावजूद उन्हें कभी भी किसान के रूप में पहचान नहीं मिल पाई है। महिला सशक्तिकरण की जब भी बात की जाती है, तब सिर्फ राजनीतिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण पर चर्चा होती है पर सामाजिक सशक्तिकरण की चर्चा नहीं होती ऐतिहासिक रूप से महिलाओं को दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता रहा है। उन्हें सिर्फ पुरुषों से ही नहीं बल्कि जातीय संरचना में भी सबसे पीछे रखा गया है। इन परिस्थितियों में उन्हें राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त करने की बात बेमानी लगती है, भले ही उन्हें कई कानूनी अधिकार मिल चुके हैं। महिलाओं का जब तक सामाजिक सशक्तिकरण नहीं होगा, तब तक वह अपने कानूनी अधिकारों का समुचित उपयोग नहीं कर सकेंगी.

प्रश्न यह है कि सामाजिक सशक्तिकरण का जरिया क्या हो सकती है? इसका जवाब बहुत ही सरल, पर लक्ष्य कठिन है। शिक्षा एक ऐसा कारगर हथियार है, जो सामाजिक विकास की गति को तेज करता है. समानता, स्वतंत्रता के साथ-साथ शिक्षित व्यक्ति अपने कानूनी अधिकारों का बेहतर उपयोग भी करता है और राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त भी होता है। महिलाओं को ऐतिहासिक रूप से शिक्षा से वंचित रखने का षडयंत्र भी इसलिए किया गया कि न वह शिक्षित होंगी और न ही वह अपने अधिकारों की मांग करेंगी, यानी, उन्हें दोयम दर्जे का नागरिक बनाये रखने में सहुलियत होगी. इसी वजह से महिलाओं में शिक्षा का प्रतिशत बहुत ही कम है. बावजूद सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से शिक्षा को किसी ने प्राथमिकता सूची में पहले पायदान पर रखकर इसके लिए विशेष प्रयास नहीं किया. कई सरकारी एवं गैर सरकारी आंकड़ें यह दर्शाते हैं कि महिला साक्षरता दर बहुत ही कम है और उनके लिए प्राथमिक स्तर पर अभी भी विषम परिस्थितियाँ हैं। यानी प्रारम्भिक शिक्षा के लिए जो भी प्रयास हो रहे हैं, उसमें बालिकाओं के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित करने की सोच नहीं दिखती। इसलिए गांवों में बेहतर शिक्षा उपलब्ध कराने और बच्चों में शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने पर खास जोर देने की जरूरत है।

७३वें संविधान संशोधन के बाद पंचायती राज व्यवस्था के तहत निर्वाचित स्थानीय प्रतिनिधियों ने भी पिछले १०-१५ वर्षों में शिक्षा के लिए उल्लेखनीय कार्य नहीं किया. सामान्य तौर पर ऐसा देखने में आया है कि पुरुष पंचायत प्रतिनिधियों ने निर्माण कार्यों पर जोर दिया क्योंकि इसमें भ्रष्टाचार की संभावनाएं होती हैं। शुरुआती दौर में महिला पंचायत प्रतिनिधियों ने भी कठपुतली की तरह पुरुषों के इशारे एवं दबाव में उनकी मर्जी के खिलाफ अलग कार्य नहीं किया। आज भी अधिकांश जगहों पर महिला पंच-सरपंच मुखर तो हुई हैं पर सामाजिक मुद्दों के प्रति उनमें अभी भी उदासीनता है।महिलाओं को स्वंम अपने अधिकारों को समझना होगा क्योंकि सामाजिक सशक्तिकरण के लिहाज से यह उनके लिए भी जरूरी है।

ऋतु कपिल कार्यकारी संपादक

किसानों की मेहनत से तिलहन उत्पादन में मिल सकती है आत्मनिर्भरता – डॉ. धीरज सिंह

देश में सरसों उत्पादन की अपार संभावनाएं हैं। किसानों एवं वैज्ञानिकों की मेहनत से

सरसों उत्पादन में बहुत बढोत्तरी की जा सकती है। देश के अधिकांश जिलों में सरसों की उत्पादकता बहुत कम है, जिसे वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर 25–30 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक आसानी से किया जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि नवीन तकनीकों की जानकारी किसानों को समय पर मिले और तकनीकों को अपनाने में आने वाली समस्याओं का समाधान समय पर किया जाये। डॉ. धीरज सिंह ने कहा कि सरसों का उत्पादन बढाने में उन्नत किस्मों के चयन के साथ–साथ समय पर सही शस्य क्रियाओं को करने का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। घने पौधों की छटाई, समय पर निराई–गुडाई, 55–60 दिन में नीचे के पत्तों को तोडने से सरसों के उत्पादन में बढोत्तरी होती है। इस अवसर पर निदेशालय के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बसन्त कुमार काण्डपाल ने सरसों में पोषक तत्व प्रबंधन, डॉ. पी.के.राय ने रोगों की पहचान एवं नियंत्रण, डॉ. वी.वी. सिंह ने उन्नत किस्मों, डॉ. लिजो थोमस ने प्रदर्शन कार्यक्रमों की जानकारी दी। निदेशालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार शर्मा ने किसानो को निदेशालय के प्रसार कार्यक्रमों के बारे में बताया

जन समस्याओं के समाधान के लिए राजस्थान संपर्क

जयपुर, श्रीमती वसुन्धरा राजे की पहल पर आमजन की समस्याओं के शीघ्र, सरल और व्यवस्थित समाधान के लिए राज्य सरकार ने समाधान' नामक नई प्रक्रिया शुरू करने का निर्णय लिया है। इसके लिए एक नया पोर्टल विकसित किया जा रहा है, जिसे 'राजस्थान नाम दिया गया है। क्योंकि वर्तमान में जनसुनवाई के लिए उपखण्ड और जिला स्तर पर जन अभाव अभियोग निराकरण और सतर्कता समितियां काम कर रही हैं। इसके अलावा राज्य में एक सुगम पोर्टल है। कुछ जिलों में हैल्पलाईन है और प्रदेश स्तर पर मुख्यमंत्री जनसुनवाई की परिवेदनाओं से जुड़ा सीएमआईएस पोर्टल भी काम कर रहा है। जनसुनवाई के अधिक केन्द्र होने के कारण निश्चित समयावधि में जनसमस्याओं का समाधान सरल व व्यवस्थित तरीके नहीं हो पा रहा। इसलिए निस्तारण की अलग-अलग इन सभी प्रक्रियाओं को एकही प्लेटफार्म पर लाने के लिए यह एकीकृत पोर्टल विकसित किया जा रहा है।

पंचायती राज संस्थाएं गांव में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराए-गुलाब चन्द कटारिया

जयपुर, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री गुलाब चन्द कटारिया ने कहा है कि पंचायती राज संस्थाओं का सुदृढ़ीकरण, वित्तीय सशक्तीकरण और विकेन्द्रीकरण राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। पंचायती राज से जुड़ी योजनाओं की शासन सचिवालय में आयोजित समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि वित्तीय शक्तियों के विकेन्द्रीकरण से समय पर निर्णय लिये जा सकते हैं तथा बेवजह विलब नहीं होता। इसी को दृष्टिगत रखते हुए नियमों में संशोधन कर 2 लाख रुपये तक के विकास कार्य की वित्तीय स्वीकृति की शक्ति ग्राम पंचायत को दी जा रही है।

एमपी में बंपर गेहूं पैदावार सरसों को नुकसान

मध्य प्रदेश में खरीफ सीजन के दौरान हुई बारिश के कारण खेतों में मौजूद नमी और वर्तमान में प्रदेश के एक बड़े हिस्से में

मावठ की बारिश के कारण फसलों को फायदा होता दिखाई दे रहा है। कृषि विशेषज्ञों और कृषि विभाग के मुताबिक वर्तमान में चल रहा मौसम खासतौर पर गेहूं के लिए काफी मददगार है। लेकिन सरसों को थोड़ा नुकसान हो सकता है।

प्रदेश में गेहूं के बंपर पैदावार की उम्मीद है इस बार गेहूं की पैदावार 160 लाख टन को भी छू सकती है। भारी बारिश या लगातार ज्यादा ठंड से ही फसलों में मामूली नुकसान संभव है। इस संबंध में बात करते हुए कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि मध्य प्रदेश में वर्तमान में मौसम फसलों के अनुकूल है। जिस समय बारिश की आवश्यकता थी उसी दौरान यह हुई है। बारिश होने के कारण पाला का खतरा भी नहीं है। उन्होंने कहा कि इस बार रबी सीजन के दौरान प्रदेश में 113 लाख हैक्टेयर से भी अधिक क्षेत्र में बुआई हुई है।

खेतों में उजाला

जालंधर : नगर निगम में एक तरफ मेयर सुनील ज्योति निगम अधिकारियों के बचाव में लगे हैं, तो दूसरी ओर रोजाना अधिकारियों की धांधली की परतें खुल रही हैं। नया मामला आया है वार्ड नंबर नौ की भाजपा पार्षद सुदेश रानी के इलाके का, जहां पार्षद की मंजूरी के बगैर आबादी को छोड़कर लाखों रुपये बजट की आठ स्ट्रीट लाइटें खेतों में लगा दी गई है। हैरानी की बात है कि शहरी इलाके में सैकड़ों लाइटें रोजाना बंद रहती हैं, तो कई प्वाइंट शिकायतों के बावजूद महीनों से बंद पड़े

हैं। लेकिन खेतों में लाइटें लगाने में ठेकेदार से लेकर अफसर तक खासी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। जाहिर है शिकायत पर एक बार फिर मेयर अधिकारियों की इस मनमानी पर कोई कार्रवाई के बजाय पार्षद को लाइटें सही जगह लगवाने की सलाह दे रहे हैं।

पार्षद पति गुरमीत चंद ने मेयर से शिकायत देते हुए कहा कि उन्होंने ग्रीन एवेन्यू और बसंत एवेन्यू के बीच आबादी वाली जगह पर स्ट्रीट लाइटें लगाने को कहा था। लेकिन ठेकेदार ने अफसरों की सलाह पर किसी को फायदा पहुंचाने के लिए आबादी से काफी आगे जाकर खेतों में आठ लाइटें लगा दी।

ग्वार वायदा में लगा अपर सर्किट

एनसीडीईएक्स में ग्वार सीड और ग्वार गम के सभी अनुबंधों में जोरदार तेजी रही। इनके कई अनुबंधों में अपर सर्किट लग गया क्योंकि इनमें तेजी का आंकड़ा चार फीसदी के स्तर को छू गया। कारोबारियों के अनुसार हाजिर मंडियों में भाव

सुधरने से ग्वार गम और ग्वार सीड में तेजी आई।

ग्वार सीड जनवरी वायदा चार फीसदी की तेजी के साथ अपर सर्किट पर पहुंच गया। इसका भाव 4605 रुपये प्रति क्विंटल तक पहुंच गए। ग्वार सीड के अप्रैल व फरवरी अनुबंधों में अपर सर्किट लग गया। ग्वार गम के फरवरी और मार्च अनुबंधों में अपर सर्किट लगा। फरवरी अनुबंध 12620 रुपये प्रति क्विंटल पर पहुंच गया।

किसानों को पांच रुपये में भोजन-प्रभूलाल सैनी

जयपुर, किसानों को पांच रुपये में भोजन - 60 दिवसीय कार्य योजना के तहत राज्य की कृषि मंडियो में आने वाले काश्तकारों को 'किसान कलेवा योजना' के अन्तर्गत पांच रुपये में भरपूर पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जायेगा, जिसमें किसानों को छाछ, चपाती और सब्जी परोसी जाएगी। कृषकों को चार लाख चारा मिनी किट वितरित करने, राज्य में 800 डिग्गियों, 1700 फार्म पौन्ड एवं 150 जल हौज की स्थापना के कार्य चिन्हित किये। प्रदेश में जयपुर-दिल्ली मार्ग पर बहरोड़ के पास 40 हेक्टेयर

क्षेत्र में ट्युलिप व लिलिनम के फूलों का पार्क बनेगा। बागवानी विभाग में ग्लोरीकल्चर निदेशालय बनेगा। टोंक जिले के देवड़ावास गांव में 8 बीघा का ऑलिव (जैतून) पार्क बनेगा।

सिर पर रख दिया स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के लिए लौह व मिट्टी

अंबाला शहर : भानोखेड़ी के किसानों ने स्टैच्यू आफ यूनिटी के लिए अपने खेतों में प्रयोग होने वाला लोहा भेंट किया। गाव के लोगों ने गुरुद्वारा, मंदिर, माडी, खेड़ा, धार्मिक स्थलों की मिट्टी भी भेंट की। लोहे व मिट्टी की विधिवत पूजा करके किट में डाला और उसके बाद सिर पर रखकर उसे एक वाहन में रख दिया !

टमाटर भी सोयाबीन की तरह गायब हो जायेगा

हल्द्वानी : सोयाबीन के लिए मशहूर रहा दौलतपुर गोला पार्क अब टमाटर से भी हाथ धोने वाला है। करोड़ों के इस कारोबार को बीमारी दीमक की तरह चाट रही है। पैदावार में लगातार गिरावट से परेशान किसान टकटकी लगाये सरकार की ओर देख रहा लेकिन सरकार है कि किसानों की सुध लेना ही भूल बैठी है। किसान मानते हैं कि यही हाल रहा तो आने वाले कुछ सालों में टमाटर भी सोयाबीन की तरह गायब हो जायेगा।

दुग्ध उत्पादकों को नए साल का तोहफा

लंढौरा: दुग्ध उत्पादकों के लिए अच्छी खबर है। दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ की बैठक में दुग्ध उत्पादकों से खरीदे जाने वाले दूध के दाम दो रुपये बढ़ा दिए हैं। अब दुग्ध उत्पादकों से 31 रुपये प्रति लीटर दूध खरीदा जाएगा।

शिकारपुर लंढौरा स्थित दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ की स्टाफ की बैठक में विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। अध्यक्षता कर रहे संघ के अध्यक्ष डॉ. रणवीर सिंह ने बताया कि दुग्ध उत्पादकों से पहले दूध 29 रुपये प्रति लीटर खरीदा जाता था, जिसे अब 31 रुपये प्रति लीटर खरीदा जाएगा। दूध में किसी भी प्रकार की मिलावट न हो, इसके लिए फील्ड कमिऱ्यों को निर्देशित किया कि वे आवश्यकतानुसार प्रत्येक दुग्ध मार्ग पर स्थित दुग्ध वाहन के साथ जाकर स्वयं समितियों की फैट व एसएनएफ मौके पर ही चेक करेंगे। साथ ही दुग्धशाला में दूध के आने के बाद उसका मिलान कराया जाए, जिससे पारदर्शिता बनी रहे। कहा कि दुग्ध संघ से जुड़े किसानों की समस्याओं का निराकरण किया जाए। उन्होंने किसानों की समस्या को गंभीरता से न लेने व लापरवाही बरतने पर कार्रवाई की चेतावनी दी।

कृषि में यंत्रीकरण समय की आवश्यकता प्रोफेसर ए.के. दाहमा

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति प्रोफेसर ए.के. दाहमा ने कृषि में यंत्रीकरण समय की आवश्यकता बतायी है। उन्होंनें किसानों को उन्नत कृषि यंत्रों को उपयोग में लाने पर जोर दिया और उम्मीद जताई कि इससे किसानों की पैदावार में अवश्य ही बढ़ोतरी होगी। प्रारम्भ में विश्वविद्यालय के कृषि अभियन्ता ई. विपिन लड्ढा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि इस ''ट्रैक्टर एवं कृषि यंत्रों के रखरखाव''

पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 112 किसानों ने भाग लिया और ट्रैक्टर एवं कृषि यंत्रों के रखरखाव के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. गोविन्द सिंह किसानों से इस तरह के कार्यक्रमों में ज्यादा से ज्यादा जुड़ने का आह्वान किय

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064 यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,**Cell**-9321758550,**Email:info@srushtiagronews.com**, **website:www.srushtiagronews.com**. **RNI No.MAHHIN/2013/49425**